• वर्ष : 05 • अंक : 01 • जून 2026 • हिन्दी मासिक पत्रिका ₹ 40/-

RNI : CHHHIN 2022/86325

स्वतंत्र बोल

www.swatantrabol.com

बदलता बस्तर - संवरता बस्तर
लाल आतंक से मुक्त बस्तर..

छत्तीसगढ़ शासन

सुशासन तिहार 2026

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

सुशासन तिहार

2026

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

01 मई से 10 जून 2026

गाँव-गाँव, द्वार-द्वार
सुशासन की सरकार

जिला स्तर पर लंबित प्रकरणों, जमीन संबंधी मामलों एवं प्रमाण–पत्र से जुड़ी समस्याओं का निराकरण

ग्राम पंचायत एवं वार्ड स्तर पर जनसमस्या निवारण शिविरों का आयोजन

उद्देश्य

- समस्याओं का त्वरित एवं समयबद्ध समाधान
- विकास कार्यों को मिलेगी गति
- जन-कल्याणकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन
- पारदर्शिता और जवाबदेही से 'जनकल्याण' होगा सुनिश्चित

संवाद से संपूर्ण समाधान

RNI : CHHHIN 2022/86325

स्वतंत्र बोल

www.swatantrabol.com

वर्ष : 05, अंक : 01, जून 2026

प्रेरणास्त्रोत
स्व. जीवन गिरि गोस्वामी

संपादक
राहुल गिरि गोस्वामी

कानूनी सलाहकार
आनंद मोहन तिवारी
दिनेश मिश्रा

प्रचार-प्रसार-विज्ञापन
शेखर सागर

ले-आउट/डिजाइन
द्वारिका प्रसाद साहू

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
राहुल गिरि गोस्वामी द्वारा
डी-317 बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने
टैगोर नगर, रायपुर (छ.ग.)
पिन-492001 से प्रकाशित
एवं सागर प्रिंटर्स, पुरानी बस्ती, रायपुर (छ.ग.)
पिन-492001 से मुद्रित।
सम्पादक - राहुल गिरि गोस्वामी

रजिस्टर्ड कार्यालय
डी-317 बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने
टैगोर नगर, रायपुर (छ.ग.)
पिन-492001
Email : Bolswatantra@gmail.com
Phone : 9754374333

(समस्त न्यायालीन प्रकरणों के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र रायपुर होगा।)

सुशासन तिहार : आम पेड़ की छांव... 03

सहूलियत, सम्मान और सेहत... हर घर नल से ... 06

स्ट्रीट वेंडर्स के सपनों को मिली नई ... 09

हरित विकास, जल संरक्षण और जनभागीदारी से पर्यावरणीय समृद्धि की ओर बढ़ता छत्तीसगढ़ 10

संस्कृति और परंपरा का अद्भुत संगम है ... 16

स्वतंत्रता आंदोलन में आरएसएस का ... 18

निवेश के लिए बिछा रेड कारपेट, 9,580... 22

25 साल पहले गदर-लगान ने रचा था इतिहास 29

टीम में जिताऊ चेहरे जरुरी ताकि 2028 के फाइनल मैच ना हारे

छत्तीसगढ़ की बीजेपी सरकार को ढाई साल पूरा हो गया है। सरकार अब प्रतिदिन साल 2028 मे होने वाले विधानसभा चुनाव के तरफ एक कदम बढ़ा रही है. साल 2023 में विधानसभा चुनाव के बाद मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अपनी टीम बनाई। उस टीम में जाति और क्ष्रेत्रीय समीकरणों को ध्यान में रखकर नये और पुराने विधायकों को मंत्री बनाया गया था। शुरुआत के एक साल तो फूल मालाओ और स्वागत सत्कार के साथ काजू कतली में निकल गया, उसके बाद के डेढ़ सालो में मंत्रियो ने सरकार छवि बनाने में कोई विशेष प्रयास नहीं किया उलटे मंत्रियो के विभागों में भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी की शिकायते बढ़ गई है। सरकार नए मंत्रियो से अपेक्षाकृत खुश नहीं है, हाल ही में 18 जून की आधी रात तक चले बैठक में यह बात स्पष्ट हो गया है। बैठक में मंत्रियो से रिपोर्टकार्ड मांगा गया। सरकार और संगठन के साथ बीजेपी के कार्यकर्त्ता भी इस बात को समझ चुके है कि सरकार के काम जमीनी स्तर पर सही नहीं है, ऐसे में मौजूदा टीम से साल 2028 में होने वाले फाइनल मैच जितने की उम्मीद पालना बेमानी होगा। ऐसे में समय रहते मंत्रिमंडल में फेरबदल आवश्यक है नहीं तो बीजेपी को 2028 के बाद विपक्ष में बैठना पड़ सकता है।

– राहुल गिरी गोस्वामी

खाट पर बैठे, ग्रामीणों की सुनी बात, मौके पर दिए समाधान

सुशासन तिहार : आम पेड़ की छांव में चौपाल

सुशासन तिहार के अंतर्गत मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का मरवाही विकासखंड के ग्राम निमधा में एक अनूठा और आत्मीय जनसंवाद देखने को मिला। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय गांव के बीच आम के पेड़ की छांव में खाट पर बैठकर ग्रामीणों से रूबरू हुए, उनकी समस्याएं सुनीं और शासन की योजनाओं के जमीनी क्रियान्वयन की वास्तविक स्थिति का प्रत्यक्ष फीडबैक लिया। उन्होंने ग्रामीणों से बिजली, पानी, राशन, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा और आवास जैसी मूलभूत सुविधाओं के संबंध में विस्तार से चर्चा की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा 1 मई से 10 जून तक पूरे प्रदेश में सुशासन तिहार का आयोजन किया जा रहा है, जिसके माध्यम से शासन स्वयं गांवों तक पहुंचकर जनता की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित कर रहा है। उन्होंने कहा कि जिन समस्याओं का तत्काल निराकरण संभव है, उनका मौके पर ही समाधान किया जा रहा है, जबकि अन्य मामलों का समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित किया जाएगा।

जनचौपाल के दौरान ग्रामीणों और मरवाही विधायक प्रणव कुमार मरपच्ची ने जिले में नर्सिंग कॉलेज, ग्राम

निमधा में मिनी स्टेडियम तथा सर्वसमाज के लिए विशाल मंगल भवन की मांग रखी। मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों की भावनाओं का सम्मान करते हुए तीनों मांगों को तत्काल स्वीकृति प्रदान करते हुए उनकी घोषणा की।

ग्रामीणों द्वारा बिजली आपूर्ति संबंधी समस्याएं उठाए जाने पर मुख्यमंत्री ने मौके पर ही अधिकारियों से जानकारी ली और स्थायी समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने ग्रामीणों को भरोसा दिलाया कि बिजली व्यवस्था में सुधार के लिए आवश्यक कदम शीघ्र उठाए जाएंगे।

जनसंवाद के दौरान राजस्व विभाग से जुड़ी शिकायत सामने आने पर मुख्यमंत्री ने संबंधित राजस्व निरीक्षकों को कड़ी चेतावनी देते हुए स्पष्ट कहा कि जनता की समस्याओं का समय पर निराकरण करें, अन्यथा कठोर कार्रवाई के लिए तैयार रहें। मुख्यमंत्री के इस स्पष्ट संदेश से सुशासन और जवाबदेही के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता एक बार फिर सामने आई।

मुख्यमंत्री ने स्व-सहायता समूहों की महिलाओं और लखपति दीदियों से संवाद करते हुए उन्हें आर्थिक प्रगति की नई ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि अब लक्ष्य केवल लखपति बनना नहीं, बल्कि करोड़पति दीदी बनना होना चाहिए। महिलाओं ने उन्हें बताया कि महतारी वंदन योजना से प्राप्त होने वाली राशि उनके परिवार, बच्चों की शिक्षा और घरेलू जरूरतों में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हाल ही में महतारी वंदन योजना की 28वीं किस्त के रूप में प्रदेश की लगभग 70 लाख महिलाओं के खातों में राशि अंतरित की गई है, जिसका लाभ ग्राम निमधा सहित पूरे जिले की महिलाओं को मिला है। उन्होंने यह भी बताया कि राज्य सरकार द्वारा 18 लाख प्रधानमंत्री आवासों की स्वीकृति दी गई है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय सुविधाओं का व्यापक विस्तार हो रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा की कि प्रदेश में शीघ्र ही सीएम हेल्पलाइन प्रारंभ की जाएगी, जिसके माध्यम से नागरिक टोल फ्री नंबर, ईमेल और व्हाट्सएप के जरिए अपनी शिकायत दर्ज करा सकेंगे। शिकायतों के त्वरित और समयबद्ध निराकरण के लिए विशेष व्यवस्था विकसित की जा रही है।

जनचौपाल के दौरान राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन 'बिहान' से जुड़ी महिला स्व-सहायता समूहों ने मुख्यमंत्री का आत्मीय स्वागत किया। महिलाओं ने विष्णु भोग चावल, ब्लैक राइस, शहद, पापड़ और लड्डू जैसे स्थानीय उत्पादों की आकर्षक टोकरी मुख्यमंत्री को भेंट की। मुख्यमंत्री ने महिलाओं की उद्यमशीलता और आत्मनिर्भरता की सराहना करते हुए कहा कि स्व-सहायता समूह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का सबसे प्रभावी माध्यम बन रहे हैं।

ग्रामीण परिवेश में आयोजित इस चौपाल में मुख्यमंत्री ने सरई के दोना-पत्तल में परोसे गए स्थानीय व्यंजनों - जामुन, कोईलार भाजी, बेल का शरबत, आम की चटनी और आमपना का स्वाद भी लिया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने जिले की स्व-सहायता समूहों की महिलाओं की प्रेरणादायक सफलता कहानियों पर आधारित 'आजीविका गाथा' कॉफी टेबल बुक का विमोचन भी किया। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक ग्रामीण महिलाओं के संघर्ष, आत्मविश्वास, परिश्रम और सफलता का जीवंत दस्तावेज है, जो हजारों महिलाओं को आत्मनिर्भरता और उद्यमिता की दिशा में प्रेरित करेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उनका यह दौरा केवल योजनाओं की समीक्षा नहीं, बल्कि लोगों के बीच बैठकर उनकी वास्तविक जरूरतों और अपेक्षाओं को समझने का प्रयास है। उन्होंने कहा कि सुशासन का वास्तविक उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक शासन की योजनाओं का लाभ पहुंचाना है और राज्य सरकार इसी संकल्प के साथ निरंतर कार्य कर रही है।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष सुश्री समीरा पैकरा, उपाध्यक्ष राजा उपेन्द्र बहादुर सिंह, नगर पालिका परिषद गौरेला के अध्यक्ष श्री मुकेश दुबे, मुख्यमंत्री के विशेष सचिव श्री रजत बंसल, आईजी श्री रामगोपाल गर्ग, कलेक्टर डॉ. संतोष कुमार देवांगन, जिला पंचायत सीईओ श्री मुकेश रावटे सहित जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित थे।

मोदी सरकार के 12 वर्ष आदिवासी उत्थान और नक्सलमुक्ति का स्वर्णकाल : विष्णुदेव साय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर भारत मंडपम में आयोजित बैठक में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को बधाई देते हुए कहा कि पिछले 12 वर्ष देश के जनजातीय समाज के सम्मान, सशक्तिकरण और विकास के लिए स्वर्णकाल साबित हुए हैं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और प्रभावी रणनीति के कारण छत्तीसगढ़ को दशकों पुरानी नक्सल समस्या से निर्णायक मुक्ति मिली। उन्होंने कहा कि नक्सल हिंसा से सबसे अधिक प्रभावित जनजातीय समुदाय अब शांति, सुरक्षा और विकास के नए दौर में प्रवेश कर रहा है। बस्तर में 'नियद नेल्ला नार' और 'बस्तर मुन्ने' जैसे अभियानों के माध्यम से योजनाओं का सैचुरेशन मोड में क्रियान्वयन किया जा रहा है तथा सुरक्षा शिविरों को 'सेवा डेरा' के रूप में विकसित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जनजातीय समाज को नई पहचान और सम्मान दिया है। भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिवस को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत हो या धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान, इन पहलों ने आदिवासी क्षेत्रों के विकास को नई गति दी है। उन्होंने कहा कि देश को पहली जनजातीय महिला राष्ट्रपति के रूप में द्रौपदी मुर्मु का नेतृत्व करोड़ों आदिवासियों के सम्मान और स्वाभिमान का प्रतीक है।

श्री साय ने कहा कि पीएम जनमन योजना के माध्यम से विशेष पिछड़ी जनजातियों के दूरस्थ इलाकों तक पहली बार बिजली, सड़क, पेयजल और आवास जैसी मूलभूत सुविधाएं पहुंच रही हैं। वहीं बस्तर में सड़क, रेल और सार्वजनिक परिवहन के विस्तार से कनेक्टिविटी की वर्षों पुरानी चुनौतियां दूर हो रही हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार जनजातीय संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है। नवा रायपुर में ट्राइबल म्यूजियम तथा शहीद वीर नारायण सिंह जनजातीय संग्रहालय का निर्माण कराया गया है। बस्तर पंडुम और बस्तर ओलंपिक जैसे आयोजनों ने दुनिया के सामने बदलते, मुस्कुराते और हिंसा-मुक्त बस्तर की नई तस्वीर प्रस्तुत की है।

उन्होंने कहा कि पेसा कानून के प्रभावी क्रियान्वयन, लघु वनोपज की रिकॉर्ड खरीदी, किसानों को धान, दलहन और तिलहन का बेहतर मूल्य तथा कृषक उन्नति योजना जैसी पहलें ग्रामीण और जनजातीय अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रही हैं। वहीं प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना और मुख्यमंत्री खाद्यान्न योजना के माध्यम से राज्य के 2 करोड़ 45 लाख जरूरतमंद लोगों को नि:शुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आदिवासियों को केवल योजनाओं का लाभार्थी नहीं बनाया, बल्कि उन्हें भारत के विकास का सक्रिय सहभागी बनाया है। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री के नेतृत्व में विकसित छत्तीसगढ़ और विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए राज्य सरकार पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करती रहेगी।

सहूलियत, सम्मान और सेहत... हर घर नल से बदली जिंदगी

रोज सुबह उठते ही घर में नल से साफ पानी आते देखने की खुशी क्या होती है, इसे कमली से पूछिए। उप मुख्यमंत्री अरुण साव को अपने आंगन में लगे नल से आ रहे पानी की धार को दिखाते खुशी से उनकी आंखें डबडबा गईं। जल जीवन मिशन ने कमली जैसी हजारों महिलाओं को अमूल्य खुशियां दी हैं। कभी पीने और निस्तारी के पानी के लिए दिनभर चिंतित रहने वाली इन महिलाओं का जीवन घर में लगे नल ने बदल दिया है।

उप मुख्यमंत्री तथा लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री अरुण साव अपने चार दिनों के बस्तर प्रवास के दौरान जल जीवन मिशन का काम देखने कमली के भी गांव पहुंचे। कमली के गांव बस्तर जिले के तोकापाल विकासखण्ड के दुगनपाल में उन्होंने कुछ और घरों में भी जाकर नल से पानी आते देखा। जल जीवन मिशन से घर में पानी पहुंचने की खुशी सभी महिलाओं के चेहरे पर दिख रही थी।

जल जीवन मिशन दूरस्थ गांवों और वनांचलों की महिलाओं के जीवन में बड़ा बदलाव ला रहा है। आधी आबादी के एक बड़े हिस्से को पीने के पानी के लिए रोज जूझना पड़ता था। खासतौर से गर्मियों के दिनों में जब हर साल सिर पर पानी के बर्तन का सफर कुछ सौ मीटरों से कुछ किलोमीटरों में बदल जाता था।

जीवन के लिए अनिवार्य जरुरत पानी की व्यवस्था गर्मियों में महिलाओं का जीवन दुष्कर बना देती थी। दुगनपाल में भी महिलाओं को रोज गांव के हैंडपंप या कुआं पर जाकर घर के सभी लोगों के लिए पानी का इंतजाम करना पड़ता था। घर में नल लग जाने से अब इस समस्या से निजात मिल गई है। जल जीवन मिशन के काम जैसे-जैसे पूरे होते जा रहे हैं, महिलाओं की बाहर से पानी लाने की चिंता और तकलीफ दूर होते जा रहे हैं। छत्तीसगढ़ में अब तक साढ़े आठ हजार से अधिक योजनाओं को पूर्ण कर संचालन के लिए पंचायतों को सौंपा जा चुका है।

जल जीवन मिशन महज हर घर तक पेयजल पहुंचाने की योजना नहीं है। यह महिलाओं की दिनचर्या और जीवन में भी बड़ा बदलाव ला रहा है। गांवों में परंपरागत रूप से घर में पेयजल और अन्य जरूरतों के लिए पानी के इंतजाम का जिम्मा महिलाओं पर ही है। घर तक पानी की पहुंच न होने के कारण उन्हें हैंडपंपो, सार्वजनिक नलों, कुंओं या अन्य स्त्रोतों से रोज पूरे परिवार के लिए जल संग्रहण करना पड़ता है।

रोजाना का यह श्रमसाध्य और समयसाध्य काम बारिश तथा भीषण गर्मी के दिनों में और कठिन हो जाता है। कई इलाकों में गर्मियों में जलस्त्रोतों के सूख जाने के कारण दूर–दूर से पानी लाने की मजबूरी रहती है। परिवार के लिए पानी की व्यवस्था हर दिन का संघर्ष बन जाता है। महिलाओं के दिन के कई घंटे इसी काम में निकल जाते हैं।

जल जीवन मिशन हर घर तक नल से जल पहुंचाने के साथ ही महिलाओं को कई समस्याओं से निजात दिला रहा है। घर तक स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल पहुंचने से वे कई चिंताओं से मुक्त हो गई हैं। अब रोज–रोज पानी के लिए बहुत सारा श्रम और समय नहीं लगाना पड़ता। इससे उन्हें घर के दूसरे कामों, बच्चों की परवरिश, खेती–बाड़ी एवं आजीविका के अन्य कार्यों के लिए अधिक समय मिल रहा है और वे इन कार्यों पर अपना ज्यादा ध्यान व समय दे पा रही हैं।

जल जीवन मिशन से बारहों महीने घर पर ही जलापूर्ति से लगातार बारिश तथा गर्मी के दिनों में बाहर से पानी लाने की मुसीबत दूर हो गई है। गर्मियों में जलस्तर के नीचे चले जाने से तथा बरसात में लगातार बारिश से जल की गुणवत्ता प्रभावित होती है। गुणवत्ताहीन पेयजल से पेट तथा निस्तारी के लिए खराब जल के उपयोग से त्वचा संबंधी रोगों का खतरा रहता है। जल जीवन मिशन ने सेहत के इन खतरों को भी दूर कर दिया है।

– कमलेश साहू

सहायक संचालक जनसंपर्क

पहली बार पहुंचे कलेक्टर और जिला पंचायत सीईओ

माओवाद के साए से विकास की राह पर बढ़ रहा बोड़गा

कभी माओवाद प्रभावित क्षेत्र के रूप में पहचाने जाने वाला बीजापुर जिले के ग्राम पंचायत ईतामपार का आश्रित ग्राम बोड़गा अब विकास की नई दिशा में आगे बढ़ रहा है। जिले के कलेक्टर श्री विश्वदीप और जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती नम्रता चौबे ने पहली बार गांव पहुंचकर ग्रामीणों से सीधा संवाद किया और उनकी समस्याओं तथा विकास संबंधी जरूरतों की जानकारी ली।

बस्तर मुन्ने शिविर का किया निरीक्षण

गांव में आयोजित बस्तर मुन्ने शिविर का निरीक्षण करते हुए कलेक्टर ने विभिन्न विभागों द्वारा संचालित सैचुरेशन अभियान की समीक्षा की। शिविर में शिक्षा, स्वास्थ्य, पंचायत और राजस्व विभाग की टीमों ने पात्र हितग्राहियों को शासन की योजनाओं से जोड़ने का कार्य किया। स्वास्थ्य विभाग द्वारा ग्रामीणों की स्वास्थ्य जांच कर आवश्यक उपचार और परामर्श भी दिया गया।

हर पात्र हितग्राही तक पहुंचे योजनाओं का लाभ

कलेक्टर ने ग्रामीणों को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए सभी पात्र परिवारों को योजनाओं से जोड़ने और शत-प्रतिशत सैचुरेशन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने शिविर के रजिस्टर और गतिविधियों का अवलोकन कर योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर दिया।

धान खरीदी केंद्र की मांग पर सकारात्मक पहल

ग्रामीणों की मांग को देखते हुए ग्राम पंचायत बैल में धान खरीदी केंद्र स्थापित करने के प्रस्ताव पर चर्चा की गई। इससे क्षेत्र के किसानों को धान बेचने में सुविधा मिलेगी और उन्हें लंबी दूरी तय नहीं करनी पड़ेगी।

आजीविका और स्वरोजगार को मिलेगा बढ़ावा

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के अंतर्गत स्व-सहायता समूहों को मजबूत बनाने, आजीविका गतिविधियों का विस्तार करने और स्वरोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराने पर विशेष जोर दिया गया। ग्रामीणों को विभिन्न आजीविका योजनाओं की जानकारी भी दी गई।

शिक्षा को बताया विकास की सबसे मजबूत नींव

कलेक्टर ने युवाओं और विद्यार्थियों से चर्चा कर शिक्षा के महत्व को समझाया। उन्होंने अभिभावकों से सभी बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने की अपील करते हुए कहा कि शिक्षा ही आत्मनिर्भरता, प्रगति और बेहतर भविष्य का आधार है।

मलेरिया मुक्त अभियान में सहयोग की अपील

स्वास्थ्य जागरूकता के तहत ग्रामीणों को मलेरिया से बचाव के उपाय बताए गए। कलेक्टर ने साफ-सफाई बनाए रखने, मच्छरों के प्रजनन को रोकने और बीमारी की स्थिति में पूरा उपचार लेने की सलाह दी। उन्होंने 15 जून से शुरू होने वाले मलेरिया मुक्त अभियान में सक्रिय भागीदारी की अपील भी की।

स्वच्छ भारत मिशन पर विशेष फोकस

प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) और स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के पात्र हितग्राहियों से चर्चा कर बरसात से पहले आवास और शौचालय निर्माण कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए गए, ताकि लोगों को योजनाओं का लाभ समय पर मिल सके।

छत्तीसगढ़ में 1.12 लाख से अधिक वेंडर्स को मिला आर्थिक संबल

स्ट्रीट वेंडर्स के सपनों को मिली नई उड़ान

कभी सड़क किनारे ठेला लगाकर सब्जियां बेचने वाले, चाय-नाश्ते की छोटी दुकान चलाने वाले या फिर फुटपाथ पर रोजी-रोटी कमाने वाले लाखों स्ट्रीट वेंडर (रेहड़ी-पटरी व्यवसायियों) के लिए पूंजी की कमी सबसे बड़ी चुनौती थी। बैंक ऋण तक पहुंच नहीं होने के कारण उनका व्यवसाय सीमित था। लेकिन प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना ने इन छोटे उद्यमियों के जीवन में बदलाव की नई कहानी लिखी है।

छत्तीसगढ़ में इस योजना के माध्यम से अब तक 1 लाख 12 हजार 36 से अधिक स्ट्रीट वेंडर (पथ विक्रेताओं) को 256 करोड़ 94 लाख रुपये से अधिक की ऋण सहायता उपलब्ध कराई जा चुकी है। योजना ने न केवल उनके कारोबार को मजबूती दी है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक आजीविका का नया अवसर भी प्रदान किया है।

कोविड-19 महामारी के दौरान आजीविका पर पड़े गंभीर प्रभाव को देखते हुए केंद्र सरकार ने 1 जून 2020 को प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (PM SVANidhi) योजना शुरू की थी। इसका उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में काम करने वाले स्ट्रीट वेंडर को बिना गारंटी कार्यशील पूंजी ऋण उपलब्ध कराना है, ताकि वे अपने व्यवसाय को फिर से शुरू कर सकें और उसका विस्तार कर सकें। योजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें किसी प्रकार की गारंटी की आवश्यकता नहीं होती। समय पर ऋण चुकाने वाले हितग्राहियों को अगले चरण में अधिक राशि का ऋण प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

योजना के तहत लाभार्थियों को चरणबद्ध तरीके से ऋण उपलब्ध कराया जाता है। प्रथम चरण में 10,000 रूपए तक का ऋण, द्वितीय चरण में 20,000 रूपए तक का ऋण तथा तृतीय चरण में 50,000 रूपए तक का ऋण दिया जाता है। अर्थात इस योजना के अंतर्गत न्यूनतम 10 हजार रुपये से लेकर अधिकतम 50 हजार रुपये तक की कार्यशील पूंजी ऋण सहायता प्राप्त की जा सकती है। समय पर पुनर्भुगतान करने वाले हितग्राही ही अगले चरण के लिए पात्र बनते हैं।

पीएम स्वनिधि योजना का लाभ उन छोटे कारोबारियों को मिलता है जो सड़क किनारे या सार्वजनिक स्थानों पर वस्तुएं एवं सेवाएं उपलब्ध कराते हैं। इनमें सब्जी एवं फल विक्रेता, चाय, नाश्ता एवं फास्ट फूड विक्रेता, पान दुकान संचालक, कपड़ा एवं रेडीमेड वस्त्र विक्रेता, जूता-चप्पल विक्रेता, किताब एवं स्टेशनरी विक्रेता, फूल एवं पूजा सामग्री विक्रेता, मोबाइल एक्सेसरीज विक्रेता, नाई, मोची, लॉन्ड्री जैसी सेवाएं देने वाले स्वरोजगारी, जैसे अनेक छोटे व्यवसाय शामिल हैं।

छत्तीसगढ़ में योजना का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़ और धमतरी जैसे जिलों में हजारों पथ विक्रेताओं को ऋण सहायता प्रदान की गई है। राज्य स्तर पर 267.22 करोड़ रुपये की स्वीकृत राशि के विरुद्ध 256.94 करोड़ रुपये से अधिक का वितरण किया जा चुका है, जिससे 1.12 लाख से अधिक हितग्राही लाभान्वित हुए हैं।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का कहना है कि पीएम स्वनिधि योजना केवल ऋण वितरण कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह छोटे उद्यमियों को औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ने का एक व्यापक अभियान है।

विश्व पर्यावरण दिवस 2026

हरित विकास, जल संरक्षण और जनभागीदारी से पर्यावरणीय समृद्धि की ओर बढ़ता छत्तीसगढ़

रायपुर, प्रकृति केवल हमारे जीवन का आधार नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और भविष्य की संरक्षक भी है। स्वच्छ वायु, निर्मल जल, घने वन और समृद्ध जैव विविधता किसी भी सभ्य समाज की अमूल्य धरोहर होते हैं। तेजी से बढ़ते शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव के इस दौर में पर्यावरण संरक्षण केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। इसी उद्देश्य से प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है, जो हमें प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों का स्मरण कराता है।

प्राकृतिक संपदा से समृद्ध छत्तीसगढ़ देश के उन राज्यों में शामिल है, जहां पर्यावरण संरक्षण और विकास के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य के विशाल वन क्षेत्र, समृद्ध जैव विविधता और जल संसाधन इसकी पर्यावरणीय पहचान हैं। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार हरित विकास, जल संरक्षण और जनभागीदारी को केंद्र में रखकर अनेक योजनाओं का सफल संचालन कर रही है।

हरियाली से समृद्धि की ओर

छत्तीसगढ़ में वृक्षारोपण को केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि इसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था और किसानों की आय से भी जोड़ा गया है। 'हरियाली प्रसार योजना' और 'किसान वृक्ष मित्र योजना' के माध्यम से किसानों को कृषि वानिकी के लिए पौधे उपलब्ध कराए जा रहे हैं तथा उन्हें अपनी भूमि पर वृक्ष लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इससे एक ओर हरित क्षेत्र का विस्तार हो रहा है तो दूसरी ओर किसानों को दीर्घकालिक आर्थिक लाभ भी प्राप्त हो रहा है।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संचालित 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान ने पर्यावरण संरक्षण को जनभावनाओं से जोड़ने का कार्य किया है। इस अभियान के माध्यम से लाखों नागरिक अपनी मां के सम्मान में पौधारोपण कर प्रकृति संरक्षण का संदेश दे रहे हैं। यह

पहल पर्यावरणीय जिम्मेदारी को सामाजिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान कर रही है।

शहरों को मिल रही हरित पहचान

तेजी से बढ़ते शहरीकरण के बीच स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। इस दिशा में 'ऑक्सीवन योजना' के तहत शहरों में ऑक्सीजन पार्क और हरित क्षेत्र विकसित किए जा रहे हैं। वहीं पर्यावरण वानिकी योजना' के माध्यम से सड़क किनारे वृक्षारोपण, पर्यावरण पार्कों का निर्माण तथा सार्वजनिक स्थलों का हरित विकास किया जा रहा है। ये प्रयास न केवल प्रदूषण नियंत्रण में सहायक हैं, बल्कि नागरिकों को बेहतर जीवन गुणवत्ता भी प्रदान कर रहे हैं।

जल संरक्षण बना जनआंदोलन

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को देखते हुए जल संरक्षण आज सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है। छत्तीसगढ़ सरकार ने इस दिशा में कई अभिनव पहलें की हैं। 'मोर गांव मोर पानी' और 'मोर गांव मोर तरिया' जैसे अभियान ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण की नई चेतना पैदा कर रहे हैं। परंपरागत तालाबों का पुनर्जीवन, वर्षा जल संचयन, चेक डैम निर्माण और जल पुनर्भरण संरचनाओं के विकास से भूजल स्तर में सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं।

राज्य में 'भूजल एवं जल संरक्षण कार्यक्रमों' के तहत जल स्रोतों के संरक्षण और संवर्धन पर विशेष बल दिया जा रहा है। जल सुरक्षा की यह सोच आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित भविष्य की नींव रख रही है।

नदियों और आर्द्रभूमियों का संरक्षण

प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाने के लिए 'नदी तट वृक्षारोपण योजना' के अंतर्गत नदी किनारों पर बड़े पैमाने पर पौधारोपण किया जा रहा है। इससे मिट्टी के कटाव पर नियंत्रण, भूजल संवर्धन और जैव विविधता संरक्षण में मदद मिल रही है।

इसी प्रकार आर्द्र भूमि (वेटलैंड) जलवायु अनुकूलन परियोजना के तहत महानदी जलग्रहण क्षेत्र में आर्द्रभूमियों के संरक्षण और पुनर्जीवन का कार्य किया जा रहा है। यह पहल जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और प्राकृतिक जल तंत्र को सुदृढ़ बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

नई पीढ़ी को पर्यावरण का प्रहरी बनाने की पहल

पर्यावरण संरक्षण की सफलता जन-जागरूकता और जनभागीदारी पर निर्भर करती है। इसी उद्देश्य से 'राष्ट्रीय हरित कोर योजना (नेशनल ग्रीन कॉर्प्स)' तथा 'ईको-क्लब कार्यक्रमों' के माध्यम से स्कूलों और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को पर्यावरणीय गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है। वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण और जैव विविधता संरक्षण संबंधी कार्यक्रमों के जरिए बच्चों और युवाओं में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता विकसित की जा रही है।

पर्यावरण संरक्षण : सरकार और समाज की साझा जिम्मेदारी

पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है। इसके लिए प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। एक पौधा लगाना, जल की बचत करना, प्लास्टिक का कम उपयोग करना, प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना और स्वच्छता बनाए रखना ऐसे छोटे-छोटे कदम हैं जो बड़े परिवर्तन का आधार बन सकते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस हमें यह संदेश देता है कि विकास और पर्यावरण एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। छत्तीसगढ़ आज हरियाली, जल संरक्षण और जनभागीदारी आधारित विकास मॉडल के माध्यम से इसी संतुलित दृष्टिकोण को साकार कर रहा है। यदि हम सभी प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों को समझें और पर्यावरण संरक्षण को जीवनशैली का हिस्सा बनाएं, तो आने वाली पीढ़ियों को एक स्वच्छ, हरित और सुरक्षित पृथ्वी सौंप सकेंगे।

धरती हमें विरासत में नहीं मिली है, बल्कि हमने इसे आने वाली पीढ़ियों से उधार लिया है। इसलिए पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी का नैतिक दायित्व है।

- डॉ. दानेश्वरी संभाकर
उपसंचालक, जनसंपर्क

आस्था, संस्कृति और पर्यटन का अनुपम संगम

छत्तीसगढ़ की पावन धरती अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, प्राचीन मंदिरों और धार्मिक आस्थाओं के लिए देशभर में विशेष पहचान रखती है। इन्हीं पवित्र स्थलों में एक नाम अत्यंत श्रद्धा और गौरव के साथ लिया जाता है, शिवरीनारायण। महानदी, शिवनाथ और जोंक नदियों के त्रिवेणी संगम पर बसा यह नगर केवल एक धार्मिक तीर्थ ही नहीं, बल्कि संस्कृति, स्थापत्य कला, इतिहास और पर्यटन का अद्भुत केंद्र भी है। सदियों से यह स्थान वैष्णव परंपरा, रामायणकालीन मान्यताओं और लोक आस्था का प्रमुख केंद्र रहा है।

शिवरीनारायण का उल्लेख छत्तीसगढ़ की प्राचीन सांस्कृतिक पहचान के रूप में किया जाता है। यह नगर विभिन्न राजवंशों की कला, स्थापत्य और धार्मिक परंपराओं को अपने भीतर समेटे हुए है। यहां के मंदिरों की भव्यता, पत्थरों पर की गई बारीक नक्काशी और धार्मिक मान्यताएं देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

रामायणकालीन आस्था से जुड़ा शिवरीनारायण

शिवरीनारायण का संबंध रामायणकालीन घटनाओं से भी माना जाता है। जनश्रुति के अनुसार यह वही पावन भूमि है जहां माता शबरी ने भगवान श्रीराम को प्रेमपूर्वक जूठे बेर खिलाए थे। कहा जाता है कि शबरी की तपोभूमि होने के कारण इस स्थान का नाम शबरीनारायण पड़ा, जो समय के साथ शिवरीनारायण के रूप में प्रसिद्ध हुआ। यहां स्थित शबरी देवी मंदिर आज भी भक्तों की गहरी आस्था का केंद्र है। इस पावन स्थल की विशेषता यह है कि यहां केवल वैष्णव परंपरा ही नहीं, बल्कि शैव, जैन और बौद्ध संस्कृतियों का भी अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। यही कारण है कि शिवरीनारायण छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक एकता और धार्मिक समरसता का जीवंत प्रतीक बन गया है।

नर नारायण मंदिर स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण

शिवरीनारायण का सबसे प्रमुख आकर्षण नर नारायण मंदिर है। लगभग बारहवीं शताब्दी में निर्मित यह मंदिर प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस मंदिर का निर्माण राजा शबर ने करवाया था। मंदिर की दीवारों और स्तंभों पर की गई सूक्ष्म नक्काशी आज भी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

मंदिर के गर्भगृह में भगवान नारायण की अत्यंत सुंदर प्रतिमा स्थापित है, जो खुदाई के दौरान प्राप्त हुई थी। इसके समीप लक्ष्मण की प्रतिमा भी स्थापित है। भगवान विष्णु के दस अवतारों, नवग्रहों तथा विभिन्न देवी-देवताओं का अत्यंत आकर्षक चित्रण मंदिर की कला को

विशिष्ट बनाता है। प्रवेश द्वार पर गंगा, यमुना और सरस्वती की मूर्तियों के साथ नाग, कच्छप और मगर जैसे प्रतीकों का अंकन भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक दर्शन को दर्शाता है। मंदिर परिसर में स्थित स्तंभों पर की गई कलाकारी मध्यकालीन शिल्पकला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती है। यही कारण है कि नर नारायण मंदिर इतिहासकारों, पुरातत्वविदों और कला प्रेमियों के लिए भी विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

केशव नारायण मंदिर की भव्यता

नर नारायण मंदिर के सामने स्थित केशव नारायण मंदिर भी अपनी भव्यता और प्राचीनता के लिए प्रसिद्ध है। बारहवीं शताब्दी के इस मंदिर में भगवान विष्णु की अत्यंत प्राचीन और दिव्य प्रतिमा स्थापित है। मंदिर की संरचना, स्तंभों पर उकेरी गई चित्रकारी तथा पत्थरों पर की गई नक्काशी इसकी कलात्मक समृद्धि को दर्शाती है। मंदिर में भगवान विष्णु के दशावतारों का सुंदर चित्रण किया गया है। यहां आने वाले श्रद्धालु न केवल धार्मिक शांति का अनुभव करते हैं, बल्कि भारतीय स्थापत्य कला की महान परंपरा से भी परिचित होते हैं।

शबरी देवी मंदिर - भक्ति और समर्पण का प्रतीक

भगवान विष्णु के चरणों के समीप जिस स्त्री की प्रतिमा अंकित है, उसे माता शबरी का स्वरूप माना जाता है। पंचरत्न शैली में निर्मित यह मंदिर ईंटों से बना एक सुंदर और प्राचीन मंदिर है। मंदिर की दीवारों और स्तंभों पर विष्णु के चौबीस अवतारों का चित्रण इसकी धार्मिक महत्ता को दर्शाता है। यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भक्ति, समर्पण और निष्कपट प्रेम का प्रतीक भी है। यहां पहुंचने वाले श्रद्धालु माता शबरी की अटूट भक्ति को स्मरण कर आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव करते हैं।

चंद्रचूड़ महादेव और जगन्नाथ मंदिर

नर नारायण मंदिर के समीप स्थित चंद्रचूड़ महादेव मंदिर शिव भक्ति का प्रमुख केंद्र है। चेदि संवत 919 में निर्मित यह मंदिर क्षेत्र की प्राचीन धार्मिक परंपराओं का महत्वपूर्ण साक्ष्य माना जाता है। यहां प्राप्त कलचुरी कालीन शिलालेख इतिहास और संस्कृति के शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। वहीं वर्ष 1927 में निर्मित जगन्नाथ मंदिर अपनी विशिष्ट संरचना और धार्मिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर के समीप स्थित विशाल वटवृक्ष को 'कल्पवट' या 'माधव कटोरा' कहा जाता है। इसकी विशेषता यह है कि इसके पत्ते दोने के आकार के दिखाई देते हैं। माघ पूर्णिमा के अवसर पर

यहां भव्य मेले का आयोजन होता है, जो लगभग पंद्रह दिनों तक चलता है। इस दौरान दूर-दूर से श्रद्धालु और पर्यटक यहां पहुंचते हैं।

त्रिवेणी संगमः प्राकृतिक सौंदर्य का अनुपम दृश्य

शिवरीनारायण की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है यहां का त्रिवेणी संगम। महानदी, शिवनाथ और जोंक नदियों का संगम इस नगर को आध्यात्मिक और प्राकृतिक दृष्टि से विशेष महत्व प्रदान करता है। संगम का स्वच्छ और शांत वातावरण पर्यटकों को अत्यंत आकर्षित करता है। नदियों के किनारे फैले खेत, हरियाली और शांत परिवेश प्रकृति प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं हैं। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय संगम का दृश्य अत्यंत मनोहारी दिखाई देता है। धार्मिक स्नान, पूजा-अर्चना और नौकायन जैसी गतिविधियां यहां के पर्यटन को और अधिक आकर्षक बनाती हैं।

लक्ष्मणेश्वर महादेव मंदिरः आस्था का प्राचीन केंद्र

शिवरीनारायण में स्थित लक्ष्मणेश्वर महादेव मंदिर अत्यंत प्राचीन और ऐतिहासिक महत्व का मंदिर है। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण सिरपुर के सोमवंशी राजाओं ने करवाया था। मंदिर में प्राप्त शिलालेखों में तत्कालीन शासकों का उल्लेख मिलता है, जो इसकी ऐतिहासिक महत्ता को और अधिक बढ़ाते हैं। मंदिर के गर्भगृह में स्थापित अद्भुत शिवलिंग को लेकर अनेक धार्मिक मान्यताएं प्रचलित हैं। लोककथाओं के अनुसार लंका विजय के बाद अयोध्या लौटते समय लक्ष्मण किसी रोग से पीड़ित हो गए थे। तब उन्होंने यहां भगवान शंकर की आराधना कर सवा लाख शिवलिंग स्थापित किए और रोगमुक्त हुए। आज भी श्रद्धालु यहां सवा लाख चावल के दाने अर्पित कर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण होने की कामना करते हैं। महाशिवरात्रि और अन्य पर्वों के अवसर पर यहां विशाल मेले का आयोजन होता है, जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु शामिल होते हैं।

आसपास के धार्मिक स्थल

शिवरीनारायण के आसपास का प्राचीन शिव मंदिर भी धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहां भगवान शिव की विशाल प्रतिमा की पूजा 'दूल्हादेव' के रूप में की जाती है। शिव के साथ शक्ति और कंकालिन

देवी की पूजा ग्राम देवी के रूप में होती है। इसके अलावा आसपास के क्षेत्रों में स्थित अनेक छोटे-बड़े मंदिर और ऐतिहासिक स्थल इस पूरे क्षेत्र को धार्मिक पर्यटन सर्किट के रूप में विकसित करने की अपार संभावनाएं रखते हैं।

पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मिल रही नई दिशा

शिवरीनारायण केवल धार्मिक महत्व का केंद्र नहीं है, बल्कि यह स्थानीय अर्थव्यवस्था और पर्यटन विकास का भी महत्वपूर्ण आधार बनता जा रहा है। यहां आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों से स्थानीय व्यापार, हस्तशिल्प, परिवहन और रोजगार को नई गति मिलती है। धार्मिक मेलों और उत्सवों के दौरान क्षेत्र की सांस्कृतिक झलक देखने को मिलती है, जिससे लोककला और लोकसंस्कृति को भी संरक्षण मिलता है।

सांस्कृतिक विरासत व समानता का जीवंत प्रतीक

शिवरीनारायण छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक आस्था और स्थापत्य वैभव का अद्भुत संगम है। यहां की प्राचीन परंपराएं, मंदिरों की भव्यता, त्रिवेणी संगम का शांत वातावरण और रामायणकालीन मान्यताएं इस स्थल को विशेष बनाती हैं। यह केवल एक तीर्थ नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, कला और अध्यात्म की जीवंत विरासत है। शिवरीनारायण आने वाला प्रत्येक व्यक्ति यहां की आध्यात्मिक ऊर्जा, ऐतिहासिक गौरव और प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। यही कारण है कि शिवरीनारायण आज भी छत्तीसगढ़ के प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है।

संस्कृति और परंपरा का अद्भुत संगम है पुरखौती मुक्तांगन

यदि आप छत्तीसगढ़ी संस्कृति और आदिवासी परंपरा को करीब से जानना और देखना चाहते हैं तो आपको एक बार नवा रायपुर स्थित पुरखौती मुक्तांगन जरूर आना चाहिये। यहां छत्तीसगढ़ के पुरखों की निशानियों और स्मृतियों को एक ही उद्यान यानी पुरखौती मुक्तांगन में स्थापित किया गया है। यहां पर छत्तीसगढ़ की आदिवासी संस्कृति और सभ्यता का अनुपम और श्रेष्ठ कलाकृतियों का विशाल संग्रहालय हैं।

200 एकड़ में फैले इस स्थल की प्राकृतिक छटा अनुपम है। यहां छत्तीसगढ़ के ग्रामीण परिवेश, रहन-सहन, भाषा-शैली, खान-पान,वेश-भूषा, आदिवासी जनजीवन, लोक नृत्य, लोक कला, लोक साहित्य की जीवंत झलक देखने को मिलती है। यहां ऐतिहासिक स्थलों का प्रतिरूप मनोरम है। इसके अलावा कृत्रिम झरना, पहाड़, गांव, खेत-खलिहान, आदिवासी जीवन, पारंपरिक नृत्य शैली को प्रस्तुत करतीं प्रतिमाएं आकर्षण का मुख्य केंद्र हैं। यहां प्राकृतिक वातावरण और मनोहारी नजारों को खुले संग्रहालय के बीच परिवार समेत आकर पिकनिक मनाते हुए आनंद ले सकते हैं।

इन्होंने किया था उद्घाटन

छत्तीसगढ़ के अस्तित्व में आने के बाद 7 नवंबर 2006 को तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने

रायपुर के उपरवारा गांव में इस संग्रहालय का उद्घाटन किया था। मुक्तांगन कैंपस में छत्तीसगढ़ का खजुराहो के नाम से प्रसिद्ध भोरमदेव मंदिर का छोटा-सा प्रतिरूप आकर्षण का केंद्र है। बस्तर के प्रसिद्ध शक्तिपीठ दंतेश्वरी मंदिर, चित्रकोट जलप्रपात, बस्तर की पहाड़ी पर स्थित ढोलकर की ऐतिहासिक गणेश प्रतिमा, ऐतिहासिक बस्तर दशहरा के रथ प्रतिरूप भी बनाया गया है।

पांच एकड़ में आमचो (हमारा) बस्तर

यहां खुले आंगन में करीब पांच एकड़ में आमचो (हमारा) बस्तर बनाया किया गया है। यहां छत्तीसगढ़ की लोककला, लोकनृत्य की झलक दिखाई गई है। विशषेकर छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध पंथी नृत्य, आदिवासी नृत्य, सुआ नृत्य, राउत नृत्य,नाचा, गेड़ी नृत्य करते हुए कलाकारों की प्रतिमाएं मन मोह लेती हैं>

छत्तीसगढ़ी हाट, देवगुड़ी

मुक्तांगन परिसर का भव्य प्रवेश द्वार, मड़ियापाट, बैगा चौक, देवगुड़ी, छत्तीसगढ़ हाट गार्डन के बीच फव्वारे, बच्चों के लिए झूले समेत मनोरंजन के अनेक साधन पर्यटकों को लुभाते हैं।

लौह एवं काष्ठ शिल्प का अद्भुत संगम

बस्तर के कलाकारों की ओर से लोहा एवं अन्य धातुओं के अलावा सागौन, शीशम की लकड़ी से बनाई गई कलाकृतियां और हजारों साल पुरानी भित्ति चित्रकला से मुक्तांगन परिसर की खूबसूरती निखरी है। साथ ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की प्रतिमाएं छत्तीसगढ़ के वीरों की गाथा की याद दिलाती हैं।

राज्य की महत्वाकांक्षी योजना

मुक्तांगन को साल 2020 में राज्य के महत्वाकांक्षी योजना में शामिल किया गया है। यह कहा जा सकता है कि मुक्तांगन परिसर का भ्रमण करके संपूर्ण छत्तीसगढ़ की संस्कृति का अवलोकन किया जा सकता है।

शहीद वीरनारायण सिंह स्मारक

यहां शहीद वीरनारायण सिंह स्मारक और संग्रहालय का भी निर्माण किया गया है। इसमें आदिवासी समाज के इतिहास, देश की आजादी में उनका योगदान, लोक कला और छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक धरोहर को सहेजा गया है।

प्रवेश शुल्क

मुक्तांगन परिसर का नजारा देखने के लिए किफायती शुल्क रखा गया है। तीन से 12 वर्ष तक के बच्चों के लिए 20 रुपये और 12 वर्ष से अधिक के लिए 30 रुपये शुल्क निर्धारित है। कैमरा शुल्क 100 रुपये और प्री वेडिंग शूटिंग करने के लिए 1500 रुपये तथा डाक्यूमेंट्री अथवा फिल्म की शूटिंग करने के लिए पांच हजार रुपये अतिरिक्त चुकाना पड़ता है। राष्ट्रीय पर्व और खास मौकों पर सरकार की ओर से निशुल्क प्रवेश देने की घोषणा भी की जाती है। आम दिनों में लगभग 500 पर्यटक पहुंचते हैं और शनिवार, रविवार और विशेष अवकाश के दिनों में दो से तीन हजार पर्यटक पिकनिक मनाने पहुंचते हैं। सप्ताह में एक दिन सोमवार को मुक्तांगन परिसर को बंद रखा जाता है।

ऐसे पहुंचे मुक्तांगन

नवा रायपुर का पुरखौती मुक्तांगन परिसर रायपुर रेलवे स्टेशन से महज 27 किलोमीटर और स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट माना से 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां जाने के लिए प्राइवेट टैक्सी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। नवा रायपुर जाने वाली सिटी बस से भी मुक्तांगन पहुंच सकते हैं।

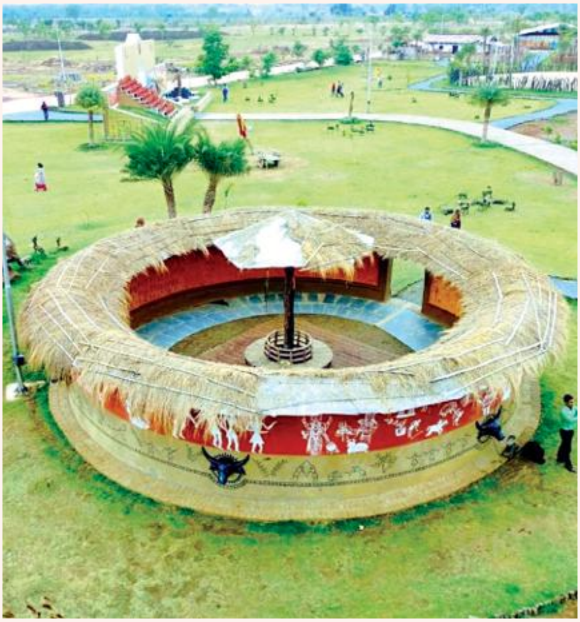

स्वतंत्रता आंदोलन में आरएसएस का योगदान..

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और स्वयंसेवकों का योगदान

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। इसमें अनेक संगठन, विचारधाराएँ, क्रांतिकारी, समाजसुधारक और लाखों सामान्य नागरिक सम्मिलित रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के इस महान यज्ञ में अनेक ऐसे व्यक्तित्व और संगठन भी थे जिन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया, किंतु अपने कार्य का प्रचार या श्रेय लेने का आग्रह नहीं किया। 'सहभाग किया, श्रेय नहीं लिया' यह वाक्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्यपद्धति और उसके स्वयंसेवकों की कार्यसंस्कृति को समझने की एक महत्वपूर्ण कुंजी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना वर्ष 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने की। डॉ. हेडगेवार स्वयं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सक्रिय सेनानी थे। उन्हें अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आंदोलनों में भाग लेने के कारण दो बार एक-एक वर्ष का सश्रम कारावास भुगतना पड़ा। पहली बार असहयोग आंदोलन के दौरान और दूसरी बार सविनय अवज्ञा आंदोलन के अंतर्गत जंगल सत्याग्रह में सहभागिता के कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। जंगल सत्याग्रह में संघ के लगभग 150 स्वयंसेवकों ने भी सक्रिय भागीदारी की थी। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि संघ का स्वतंत्रता संघर्ष से संबंध केवल वैचारिक नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष सहभागिता का भी था।

स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों में संघ के अनेक स्वयंसेवक व्यक्तिगत रूप से सक्रिय रहे। विशेष रूप से 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में संघ के अनेक प्रचारक और कार्यकर्ता विभिन्न क्षेत्रों में भूमिगत गतिविधियों, जनसंपर्क, संगठन तथा आंदोलन के संचालन में जुड़े। उस समय संघ एक नवोदित संगठन था, फिर भी उसके स्वयंसेवकों ने राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए अपना योगदान दिया।

स्वाधीनता संघर्ष के दौरान जिन स्वयंसेवकों और प्रचारकों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई, उनमें राजस्थान के जयदेवजी पाठक का नाम उल्लेखनीय है, जो आगे चलकर विद्या भारती के कार्य में सक्रिय रहे। विदर्भ के

आर्वी क्षेत्र में डॉ. अण्णासाहब देशपांडे ने राष्ट्रजागरण का महत्वपूर्ण कार्य किया। छत्तीसगढ़ के जशपुर क्षेत्र में रमाकांत केशव (बालासाहब) देशपांडे ने समाज जागरण और संगठन निर्माण का कार्य किया तथा आगे चलकर वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना की, जिसने वनवासी समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दिल्ली में वसंतराव ओक ने स्वतंत्रता आंदोलन के कालखंड में महत्वपूर्ण कार्य किया। बाद में वे दिल्ली के प्रांत प्रचारक बने और संगठन विस्तार में उनका बड़ा योगदान रहा। बिहार में प्रसिद्ध अधिवक्ता कृष्ण वल्लभ प्रसाद नारायण सिंह, जिन्हें स्नेहपूर्वक 'बबुआजी' कहा जाता था, स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े और बाद में बिहार के संघचालक बने। इसी प्रकार दिल्ली के चंद्रकांत भारद्वाज स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान गोली लगने से घायल हुए। उनके पैर में धँसी गोली जीवनभर नहीं निकाली जा सकी। बाद में वे एक प्रसिद्ध कवि बने और अनेक प्रेरणादायी संघ गीतों की रचना की।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में माधवराव देवड़े ने राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आगे चलकर वे प्रांत प्रचारक बने। मध्य प्रदेश के उज्जैन क्षेत्र में दत्तात्रेय गंगाधर (भैयाजी) कस्तूरे का भी स्वतंत्रता आंदोलन में उल्लेखनीय योगदान रहा। इन सभी कार्यकर्ताओं की विशेषता यह थी कि उन्होंने राष्ट्रकार्य को व्यक्तिगत यश और प्रसिद्धि से ऊपर रखा।

स्वतंत्रता संग्राम में संघ परंपरा से जुड़े अनेक अन्य

व्यक्तित्व भी उल्लेखनीय हैं। दैवी पंथ चौधरी, जगतपति कुमार, अण्णासाहब देशपांडे, रमाकांत केशव देशपांडे, वसंतराव ओक, नारायण सिंह, मुकुन्द हूद्दार, चंद्रकांत भारद्वाज, दादानाईक चिमूर, बाबूराव बेगड़े, लाला हंसराज तथा बालाजी रायपुरकर जैसे अनेक नाम स्वतंत्रता संघर्ष के विविध अध्यायों से जुड़े रहे। इनमें से कई व्यक्तित्वों ने जेल यात्राएँ कीं, अनेक ने संगठनात्मक कार्य संभाला और कुछ ने प्रत्यक्ष संघर्षों में भाग लेकर राष्ट्रीय चेतना को सशक्त बनाया।

विशेष रूप से हेमू कालाणी का बलिदान भारतीय युवाशक्ति के साहस का अनुपम उदाहरण है। सिंध के इस युवा क्रांतिकारी ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया। इसी प्रकार राजाभाऊ महाकाल का बलिदान भी राष्ट्रभक्ति और त्याग का प्रेरक प्रसंग है। इनका स्मरण हमें यह बताता है कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक उपलब्धि नहीं थी, बल्कि अनगिनत बलिदानों की परिणति थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी राष्ट्रीय एकीकरण का कार्य समाप्त नहीं हुआ था। गोवा, दमन और दीव अभी भी पुर्तगाली शासन के अधीन थे। इन क्षेत्रों की मुक्ति के लिए चले आंदोलनों में भी अनेक स्वयंसेवकों ने भाग लिया। मास्टर गोविंद तथा मोहन रानाडे जैसे कार्यकर्ताओं ने गोवा मुक्ति आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। यह संघर्ष इस बात का प्रमाण है कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता की अवधारणा केवल 1947 तक सीमित नहीं थी, बल्कि भारत की पूर्ण राष्ट्रीय एकता और अखंडता तक विस्तारित थी।

संघ की कार्यपद्धति की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उसने अपने स्वयंसेवकों को व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की बजाय राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पण का संस्कार दिया। संघ के स्वयंसेवकों ने अनेक क्षेत्रों में कार्य किया, परंतु अधिकांश ने अपने योगदान का प्रचार नहीं किया। उनका विश्वास था कि यदि समाज जागृत और संगठित होगा तो राष्ट्र स्वत: सशक्त बनेगा। इसीलिए संघ की परंपरा में श्रेय प्राप्ति की अपेक्षा कर्तव्यपालन को अधिक महत्व दिया गया।

आज जब सार्वजनिक जीवन में छवि-निर्माण, प्रचार और त्वरित प्रसिद्धि को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, तब 'सहभाग किया, श्रेय नहीं लिया' का आदर्श विशेष रूप से प्रासंगिक प्रतीत होता है। यह दृष्टिकोण बताता है कि राष्ट्रनिर्माण का कार्य किसी एक व्यक्ति या संगठन का नहीं, बल्कि पूरे समाज का सामूहिक दायित्व है। जो व्यक्ति या संगठन समाज को संगठित कर, प्रेरित कर और आगे बढ़ाकर स्वयं पीछे रहने की क्षमता रखता है, वही दीर्घकालीन परिवर्तन का आधार बनता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अध्ययन करते समय आवश्यक है कि हम उसके सभी आयामों को समझें। यह इतिहास केवल प्रसिद्ध नेताओं का इतिहास नहीं है; यह उन हजारों ज्ञात-अज्ञात कार्यकर्ताओं का भी इतिहास है जिन्होंने राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व समर्पित किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके स्वयंसेवकों का योगदान भी इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। उनके कार्यों का मूल संदेश यही था कि राष्ट्र सर्वोपरि है, समाज ही शक्ति का स्रोत है, और सेवा का सर्वोच्च रूप वह है जिसमें सहभागिता तो हो, परंतु श्रेय की अपेक्षा न हो।

संघ का मूल कार्य व्यक्ति निर्माण और समाज को संगठित करना : नारायण नामदेव जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के छत्तीसगढ़ प्रांत द्वारा आयोजित 15 दिवसीय प्रांतीय घोष वर्ग (नगरीय शिविर) का भव्य समापन महासमुंद स्थित सरस्वती शिशु मंदिर परिसर में राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और सांस्कृतिक चेतना के वातावरण के बीच संपन्न हुआ। 10 मई से प्रारंभ हुए इस विशेष प्रशिक्षण वर्ग के अंतिम दिवस स्वयंसेवकों ने घोष वाद्य यंत्रों के माध्यम से ऐसी सजीव और समन्वित प्रस्तुति दी कि पूरा परिसर राष्ट्रभाव से ओत-प्रोत हो उठा।

कार्यक्रम में घोष वादन की पारंपरिक शैली और आधुनिक प्रस्तुति का अद्भुत संगम देखने को मिला। शंख, आनक (साइड ड्रम), पणव (बेस ड्रम) सहित विभिन्न घोष वाद्यों की स्वर लहरियों ने उपस्थित जनसमूह को भारतीय संस्कृति और संगठन शक्ति का जीवंत अनुभव कराया। स्वयंसेवकों की अनुशासित कदमताल, सामूहिक जुगलबंदी और एकरूपता ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित नागरिकों ने करतल ध्वनि से उनका उत्साहवर्धन किया।

समापन समारोह के मुख्य वक्ता संघ के प्रांत प्रचारक नारायण नामदेव ने अपने उद्बोधन में कहा कि संघ का मूल कार्य व्यक्ति निर्माण और समाज को संगठित करना है। व्यक्ति निर्माण के माध्यम से ही राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त होता है। संघ समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर सामाजिक समरसता, सेवा, संस्कार और राष्ट्रीय चेतना के कार्यों को आगे बढ़ा रहा है। उन्होंने कहा कि संघ किसी व्यक्ति विशेष या सत्ता केंद्रित विचार पर नहीं, बल्कि राष्ट्र को सर्वोपरि मानकर कार्य करता है।

उन्होंने संघ स्थापना की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश जब सामाजिक विखंडन, आत्मविस्मृति और सांस्कृतिक हीनभावना से गुजर रहा था, तब डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने समाज को संगठित करने और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के उद्देश्य से संघ की स्थापना की। संघ की शाखा पद्धति केवल शारीरिक या बौद्धिक प्रशिक्षण का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रभक्ति, अनुशासन, आत्मविश्वास और समाज समर्पण की जीवनशैली का निर्माण करती है।

नारायण नामदेव ने कहा कि आज समाज परिवर्तन के लिए केवल नारों की नहीं, बल्कि चरित्रवान और राष्ट्रनिष्ठ युवाओं की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारत को पुन: वैभवशाली बनाने के लिए ऐसे युवाओं की जरूरत है जिनमें स्वामी विवेकानंद जैसा आत्मविश्वास, छत्रपति शिवाजी महाराज जैसा राष्ट्रधर्म और भगत सिंह जैसा त्याग और साहस हो। उन्होंने कहा कि ऐसे युवाओं का निर्माण तभी संभव है जब मातृशक्ति भी भुवनेश्वरी देवी और राजमाता जिजाबाई के समान संस्कारवान, राष्ट्रनिष्ठ और प्रेरणास्रोत भूमिका निभाए। माताएं ही राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करती हैं और परिवार ही संस्कारों की प्रथम पाठशाला है।

उन्होंने आगे कहा कि संघ अपने शताब्दी वर्ष की ओर अग्रसर है और इस अवसर पर समाज जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से 'पंच परिवर्तन' विषय पर विशेष रूप से कार्य किया जा रहा है। समाज में सामाजिक समरसता का वातावरण निर्मित करना, परिवार व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागरण फैलाना, स्वदेशी और नागरिक कर्तव्यों के प्रति समाज को प्रेरित करना तथा राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक गौरव को नई पीढ़ी तक पहुंचाना संघ के प्रमुख कार्यों में शामिल है। उन्होंने कहा कि संगठित और संस्कारित समाज ही राष्ट्र को आत्मनिर्भर और शक्तिशाली बना सकता है।

समाज परिवर्तन के लिए सभी क्षेत्रों के सज्जनों और संस्थाओं का समन्वय आवश्यक : अतुल लिमये

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित प्रमुख जन गोष्ठी में संघ के सह सरकार्यवाह अतुल लिमये ने कहा कि समाज की व्यवस्था समाज स्वयं चलाता है। भारत की परंपरा में परिवार, शिक्षा, सेवा, धर्म और सामाजिक जीवन की जिम्मेदारी समाज ने ही निभाई है।

वर्तमान समय में समाज को संभालने के लिए एक प्रभावी आंतरिक सुधार तंत्र विकसित करने तथा समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत संस्थाओं और व्यक्तियों के बीच समन्वय बढ़ाने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शिक्षा, सेवा और आर्थिक क्षेत्रों में कार्यरत लोगों को एक मंच पर लाकर समाज हित में सामूहिक प्रयास किए जाने चाहिए। पर्यावरण संरक्षण, परिवार प्रबोधन, सामाजिक समरसता तथा अन्य सामाजिक विषयों पर कार्य करने वाली संस्थाओं के बीच नेटवर्किंग और सहयोग से व्यापक परिवर्तन लाया जा सकता है।

अतुल लिमये ने कहा कि भारतीय समाज में आश्रम व्यवस्था के माध्यम से जीवन के प्रत्येक चरण को समाजोपयोगी बनाया गया था। आज भी सेवानिवृत्त और अनुभवी लोगों की क्षमता का उपयोग समाज निर्माण में किया जा सकता है। उन्होंने सेवा कार्यों को केवल सहायता तक सीमित न रखते हुए समाज में कर्तव्यबोध और सहभागिता की भावना विकसित करने पर बल दिया।

उन्होंने कहा कि संघ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों और संस्थाओं को जोड़ने तथा संवाद का मंच उपलब्ध कराने की भूमिका निभा सकता है। परिवर्तन समाज की पहल से आता है और सज्जनों की सक्रियता ही समाज को दिशा देती है। उन्होंने कहा कि 'समाज की दुर्गति दुर्जनों की सक्रियता से नहीं, बल्कि सज्जनों की निष्क्रियता से होती है।'

गोष्ठी में विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रमुख जनों ने भी अपने कार्यों की जानकारी साझा की। धार्मिक क्षेत्र के

प्रतिनिधियों ने सामाजिक सरोकारों से जुड़े अपने प्रयासों का उल्लेख किया। सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत संगठनों ने पर्यावरण संरक्षण, पॉलीथिन मुक्त अभियान तथा जनजागरण गतिविधियों की जानकारी दी। शिक्षा क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने गरीब एवं जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा, पुस्तक वितरण, श्रम संस्कार और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए किए जा रहे कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। सेवा क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं ने बायोगैस, बुजुर्गों के पुनर्वास, घुमंतू एवं निराश्रित लोगों की सेवा तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए संचालित अभियानों की जानकारी दी। आर्थिक क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने भारत की बढ़ती आर्थिक संभावनाओं तथा समाज की सहभागिता की आवश्यकता पर अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में नगर एवं बस्ती स्तर पर समाज जीवन में सक्रिय विभिन्न संस्थाओं और संगठनों के प्रतिनिधियों की सहभागिता रही। गोष्ठी का उद्देश्य समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में कार्यरत लोगों के बीच संवाद, सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देना था।

हैदराबाद में छत्तीसगढ़ इन्वेस्टर कनेक्ट

निवेश के लिए बिछा रेड कारपेट, 9,580 करोड़ रुपये के मिले प्रस्ताव

मुख्यमंत्री साय ने सात प्रमुख कंपनियों को छत्तीसगढ़ में निवेश के लिए 'इन्विटेशन टू इन्वेस्ट' (ऑफर लेटर) प्रदान किए। इनमें डेटा सेंटर, सीमेंट, सेमीकंडक्टर एवं जीपीयू इंफ्रास्ट्रक्चर, सौर ऊर्जा उपकरण निर्माण, वस्त्र, फार्मास्यूटिकल और डेयरी प्रसंस्करण क्षेत्रों की अग्रणी कंपनियां शामिल हैं।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने देश के प्रमुख उद्योगपतियों और निवेशकों को छत्तीसगढ़ में निवेश के लिए आमंत्रित करते हुए कहा विकसित भारत के ग्रोथ इंजन के रूप में छत्तीसगढ़ तेजी से उभर रहा है और राज्य में निवेशकों के लिए 'रेड कारपेट' बिछा हुआ है। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन सहित दक्षिण भारत के कई बड़े उद्योगपति, निवेशक और कारोबारी प्रतिनिधि मौजूद रहे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री साय ने बताया कि नई औद्योगिक नीति लागू होने के बाद दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु के साथ-साथ जापान और दक्षिण कोरिया में आयोजित इन्वेस्टर कनेक्ट कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य को 8 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। राज्य सरकार इन प्रस्तावों को धरातल पर उतारने के लिए तेजी से कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ आज निवेश के लिए देश के सबसे बेहतर राज्यों में से एक बनकर उभर रहा है। राज्य में उद्योगों के लिए आसान प्रक्रियाएं, सिंगल विंडो व्यवस्था, बेहतर बुनियादी सुविधाएं और उद्योग अनुकूल नीतियां उपलब्ध हैं। उन्होंने निवेशकों को

छत्तीसगढ़ में उद्योग स्थापित करने का आमंत्रण दिया।

उन्होंने कहा कि हैदराबाद ने आईटी, फार्मा, बायोटेक्नोलॉजी और एयरोस्पेस जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। छत्तीसगढ़ भी इन क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रहा है और दोनों राज्यों के उद्योगपति एवं उद्यमी मिलकर नए अवसरों का लाभ उठा सकते हैं। मध्य भारत में स्थित छत्तीसगढ़ देश का सबसे उपयुक्त लॉजिस्टिक हब बनने की क्षमता रखता है। छत्तीसगढ़ सात राज्यों से घिरा हुआ है और 60 करोड़ से अधिक उपभोक्ताओं तक सीधी पहुंच प्रदान करता है। रेलवे नेटवर्क, भारतमाला परियोजना, एयर कार्गो सुविधाओं तथा खनिज संसाधनों की उपलब्धता उद्योगों के लिए इसे अत्यंत अनुकूल बनाती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ देश में ग्रीन स्टील को बढ़ावा देने वाले अग्रणी राज्यों में शामिल है। ऊर्जा क्षेत्र में राज्य को 3.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, जिससे प्रदेश देश के प्रमुख पावर हब के रूप में उभर रहा है।

सबसे बड़ा निवेश प्रस्ताव हाइपरनेक्स्ट डाटा सेंटर लिमिटेड की ओर से प्राप्त हुआ, जिसने छत्तीसगढ़ में भारत का पहला समर्पित डिजास्टर रिकवरी डेटा सेंटर कैंपस स्थापित करने के लिए ?4,200 करोड़ के निवेश का प्रस्ताव दिया। इस परियोजना से राज्य में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूती मिलेगी और छत्तीसगढ़ डेटा सेंटर क्षेत्र का महत्वपूर्ण केंद्र बन सकेगा। इस परियोजना से लगभग 250 रोजगार सृजित होंगे।

फीग्रेड एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड ने सीमेंट क्षेत्र में 2,912 करोड़ रुपये निवेश का प्रस्ताव दिया है, जिससे लगभग 4,000 लोगों को रोजगार मिलने की संभावना है। वहीं निवाई लैब्स प्राइवेट लिमिटेड ने 1,000 करोड़ के निवेश से एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), जीपीयू इंफ्रास्ट्रक्चर, एडवांस कंप्यूटिंग और सेमीकंडक्टर असेंबली से जुड़ी सुविधाएं विकसित करने का प्रस्ताव दिया। इससे राज्य में आधुनिक तकनीकी उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा एवं लगभग 200 रोजगार सृजित होंगे।

सौर ऊर्जा उपकरण निर्माण क्षेत्र की एसजी मार्ट लिमिटेड ने 700 करोड़ रुपये निवेश का प्रस्ताव दिया है, जिससे लगभग 450 लोगों को रोजगार मिल सकता है।

सरवणा मिल्स प्राइवेट लिमिटेड ने 528 करोड़ रुपए के निवेश से अत्याधुनिक टेक्सटाइल और परिधान निर्माण इकाई स्थापित करने का प्रस्ताव रखा है। इस परियोजना से लगभग 2,500 लोगों को रोजगार मिलने की संभावना है।

फार्मास्यूटिकल क्षेत्र की काबरा ड्रग्स ने 200 करोड़ रुपये तथा डेयरी क्षेत्र की दिनशॉज़ डेयरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड ने 40 करोड़ रुपये निवेश का प्रस्ताव दिया है। इन दोनों परियोजनाओं से क्रमशः लगभग 250 और 150 रोजगार सृजित होंगे।

हैदराबाद दौरे के दौरान मुख्यमंत्री साय और राज्य के प्रतिनिधिमंडल ने देश की कई अग्रणी कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठकें कीं। इनमें गूगल इंडिया, आईबीएम, पॉलीकैब इंडिया, पेज इंडस्ट्रीज और डेल्टा इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी प्रमुख कंपनियां शामिल रहीं। बैठकों में छत्तीसगढ़ में निवेश की संभावनाओं, उपलब्ध औद्योगिक सुविधाओं और राज्य सरकार की उद्योग-अनुकूल नीतियों पर विस्तार से चर्चा हुई। इसके अलावा स्वामी नारायण गुरुकुल संगठन के प्रतिनिधियों ने भी मुख्यमंत्री से मुलाकात कर रायपुर के टाटीबंध में 650 बिस्तरों वाले चैरिटेबल अस्पताल की स्थापना के प्रस्ताव पर चर्चा की।

इन्वेस्टर कनेक्ट कार्यक्रम में आईटी, डेटा सेंटर, सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स, एयरोस्पेस एवं रक्षा, ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) और उन्नत विनिर्माण जैसे भविष्य के उद्योगों में निवेश के अवसरों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया। निवेशकों ने इन क्षेत्रों में विशेष रुचि दिखाई।

कार्यक्रम में सीएसआईडीसी के अध्यक्ष राजीव अग्रवाल, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव सुबोध कुमार सिंह, उद्योग विभाग के सचिव रजत कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव राहुल भगत, इन्वेस्टमेंट कमिश्नर ऋतु सेन, सीएसआईडीसी के प्रबंध संचालक विश्वेश कुमार, उद्योग विभाग के संचालक प्रभात मलिक एवं अन्य अधिकारीगण शामिल थे।

होर्मुज के पानी में अमेरिका की मनमानी!

3 दिन, 3 जहाजों पर हमला, 3 भारतीयों की मौत

पश्चिम एशिया के जलक्षेत्र खासकर होर्मुज स्ट्रेट और ओमान की खाड़ी पिछले तीन दिनों में भारतीय नाविकों के लिए काफी खतरनाक हो गए हैं. अमेरिका ने यहां दादागीरी करते हुए 72 घंटे में तीन ऐसे जहाजों पर हमला किया है जिस पर भारतीय नाविक सवार थे. 10 जून को हुए एक हमले में तो तीन भारतीय नागरिकों की जान चली गई।

अभी भी सैकड़ों भारतीय सैलर्स इस वक्त इस खतरनाक पानी में फंसे हुए हैं, जहां हर गुजरता जहाज मिसाइल या ड्रोन का निशाना बन सकता है. पिछले कुछ हफ्तों से ईरान ने होर्मुज को 'सख्त नियंत्रण' में ले लिया है, जबकि अमेरिका ने ईरानी बंदरगाहों पर नौसैनिक ब्लॉकेड लगा दिया है.

इसके तहत अमेरिका यहां से गुजरने वाले जहाजों पर मनमानी हमले कर रहा है.

72 घंटे में तीन हमले

पहला हमला 8 जून को ओमान के दक्षिण-पूर्वी तट पर हुआ. यहां अमेरिकी नेवी ने अमेरिका द्वारा प्रतिबंधित टैंकर 'मैरीवेक्स' पर मिसाइल से हमला किया. इस जहाज के क्रू मेंबर में 24 भारतीय थे. गनीमत ये रही कि इस हमले में किसी भारतीय की जान नहीं गई. US CENTCOM के मुताबिक, जहाज ईरानी बंदरगाह की ओर जा रहा था और चेतावनी के बावजूद रुकने से इनकार कर दिया. हमले में जहाज की इंजीनियरिंग और स्टीयरिंग सिस्टम क्षतिग्रस्त हो गए और इसमें आग लग गई.

9-10 जून को अमेरिकी नेवी ने फिर से मनमानी की. अमेरिका ने ओमान तट के पास MT Settebello नाम के ऑयल टैंकर पर हमला किया. इस जहाज पर 24 इंडियन क्रू के सदस्य मौजूद थे. इनमें से 21 को बचा लिया गया, लेकिन तीन भारतीय नाविक लापता हो गए. बाद में भारत सरकार ने इन तीनों नाविकों के मौत की पुष्टि की है। हालांकि अमेरिकी नेवी के पास इस जहाज पर हमला करने के बजाय इसे कब्जे में भी लेने का विकल्प था. अमेरिका क्रू मेंबर्स को अरेस्ट भी कर सकता था. लेकिन यूएस नेवी ने दादागीरी करते हुए सीधे इस पर हमला कर दिया.

इस बीच 11 जून यानी गुरुवार को MT Jalveer नाम के एक और भारतीय क्रू वाले जहाज से जुड़ी समुद्री सुरक्षा घटना सामने आई भारतीय दूतावास और विदेश मंत्रालय ने पुष्टि की कि ओमान के निकट एक जहाज संकट में फंस गया है और भारतीय चालक दल को निकालने की प्रक्रिया शुरू की गई है।

बाद में रिपोर्ट आई कि इस जहाज पर 21 भारतीय क्रू मेंबर्स सवार थे। हालांकि इस हमले में इन्हें किसी

तरह की चोट नहीं आई है. और सभी क्रू मेंबर्स का रेस्क्यू कर लिया गया है. यह तीन दिनों में तीसरी ऐसी घटना है जिसने भारत की चिंता बढ़ा दी है।

क्रू मेंबर्स इंडियन थे, लेकिन जहाज भारतीय नहीं

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा है कि इन घटनाओं में शामिल तीनों जहाज विदेशी झंडे वाले हैं. ये भारतीय स्वामित्व वाले जहाज नहीं हैं; ये सभी विदेशी झंडे वाले जहाज हैं. उन्होंने इस बात की भी पुष्टि की कि ये हमले वहां तैनात अमेरिकी नौसेना की ने किए हैं।

होर्मुज में फंसे हैं हजारों इंडियन सेलर

शिपिंग मिनिस्ट्री के अधिकारी मुकेश मंगल ने बताया कि 562 भारतीय नाविक अभी भी उस इलाके में भारतीय झंडे वाले 13 जहाजों पर मौजूद हैं; इनमें से 329 होर्मुज के पश्चिम में और बाकी होर्मुज के पूर्व में हैं. इसके अलावा उस इलाके में विदेशी झंडे वाले कई जहाजों पर लगभग 18,000 भारतीय नाविक मौजूद हैं.

मुकेश मंगल ने यह भी कहा कि अंतरराष्ट्रीय जल क्षेत्र में जहाज चलाने की पूरी आज़ादी है और गाइडलाइंस तभी लागू होती हैं जब जहाज बंदरगाहों के करीब पहुंचते हैं.

अमेरिका ने क्या दलीलें दी?

अमेरिका ने इन घटनाओं पर विस्तृत प्रतिक्रिया दी है और तस्वीरें भी जारी की है. MT Jalveer पर एक्शन की वजह बताते हुए अमेरिकी नेवी ने दावा किया है कि MT जलवीर ओमान की खाड़ी से ईरान का तेल ले जाने की कोशिश कर रहा था. जब जहाज के क्रू ने अमेरिकी सेना के निर्देशों का बार-बार पालन नहीं किया तो अमेरिकी विमान ने जहाज के इंजन रूम पर दो हेलफायर मिसाइलें दागीं. MT Jalveer पर गिनी बिसाऊ का झंडा लगा था।

अमेरिकी नेवी ने कहा कि इससे पहले इसी हफ्ते अमेरिकी विमानों ने सोमवार और मंगलवार को पलाऊ के झंडे वाले जहाजों MT मैरिवेक्स और MT सेटेबेलो को रोका था. मैरिवेक्स ने एक ईरानी बंदरगाह तक जाने की कोशिश करके नाकेबंदी का उल्लंघन किया था और सेटेबेलो ने ईरानी तेल ले जाने की कोशिश की थी।

अमेरिका के अनुसार 13 अप्रैल को नाकेबंदी शुरू होने के बाद से CENTCOM की सेनाओं ने नियमों का पालन न करने वाले नौ जहाजों को रोका है, नियमों का पालन करने वाले 135 जहाजों का रास्ता बदला है, और मानवीय सहायता ले जा रहे 42 जहाजों को जाने दिया है।

अमेरिका के अनुसार यह नाकेबंदी निष्पक्ष रूप से उन सभी देशों के जहाजों पर लागू की जा रही है जो ईरानी बंदरगाहों और तटीय इलाकों में आ-जा रहे हैं, जिसमें अरब की खाड़ी और ओमान की खाड़ी में स्थित सभी ईरानी बंदरगाह शामिल हैं.

मौत का गलियारा क्यों बना एनर्जी रूट

स्ट्रेट ऑफ होर्मुज से दुनिया का करीब 20% तेल और LNG गुजरता है. ईरान जंग का अंतिम समझौता होने तक इस रूट को बंद कर दिया है, अमेरिकी ने भी अपनी ओर से ब्लॉकेड लागू किए हैं और ईरानी कच्चे तेल की आवाजाही पर पूरी तरह से रोक लगा दिया है. दोनों तरफ से ड्रोन, मिसाइल और गनबोट अटैक्स हो रहे हैं.

भारत के हजारों नाविक हर साल खाड़ी क्षेत्र में चलने वाले तेल टैंकरों और मालवाहक जहाजों पर काम करते हैं. लेकिन ईरान-अमेरिका संघर्ष के कारण यही समुद्री मार्ग युद्धक्षेत्र में बदल गया है. जहाजों की राष्ट्रीयता या चालक दल की नागरिकता अब सुरक्षा की गारंटी नहीं रह गई है।

भारत के विदेश मंत्रालय ने क्षेत्र में वाणिज्यिक जहाजों पर लगातार हो रहे हमलों को 'गहरी चिंता का विषय' बताया है और तनाव कम करने की अपील की है।

फिलहाल समुद्र में काम करने वाले भारतीय नाविकों के परिवारों के लिए यह सिर्फ भू-राजनीति नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु का सवाल बन चुका है. ईरान और अमेरिका की जंग चाहे कूटनीतिक नक्शों पर लड़ी जा रही हो, लेकिन उसकी सबसे खतरनाक मार इस समय होर्मुज के पानी में ड्यूटी कर रहे भारतीय सेलर्स झेल रहे हैं।

विजन 2031- सर्वाधिक विकसित बस्तर संभाग

छत्तीसगढ़ की बीजेपी नित विष्णुदेव सरकार ने वर्षो तक नक्सली आतंक का दंश झेलने वाले बस्तर संभाग के लिए विकास के रोडमैप तैयार किया है। बस्तर संभाग आजादी के अब तक विकास से कोसो दूर है, और यहाँ के रहवासी मुभूत सुविधाओं बिजली पानी स्वास्थ्य सड़क और शिक्षा से दूर है। ऐसे में विष्णुदेव सरकार ने उनके चहुमुखी विकास के लिए एक रोडमैप की जरुरत है। छत्तीसगढ़ की सरकार विजन 2031 बनाया है, जिसका उद्देश्य बस्तर क्षेत्र को आगामी 2031 तक तेजी से विकसित, सुरक्षित और आत्मनिर्भर क्षेत्र बनाना है।

इस योजना का लक्ष्य बस्तर को केवल बुनियादी विकास तक सीमित नहीं रखना है, बल्कि इसे एक समग्र विकास मॉडल के रूप में आगे बढ़ाना है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी ढांचा शामिल हैं। घने जंगलों, समृद्ध आदिवासी संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध बस्तर जिसका ज़िला मुख्यालय जगदलपुर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के मार्गदर्शन में चल रही सुरक्षा और विकास की दोहरी रणनीति मे नित नए आयाम गढ़ रहा हैं।

बस्तर के जंगलो और रास्तों पर कभी सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ की खबरे आती थीं, वहां अब सड़कें बन रही हैं, बिजली पहुंच रही है और विकास की नई इबारत लिखी जा रही है। ताड़मेटला और कटेकल्याण–कापानार–नडेनार जैसी सड़कें अब तैयार हैं। बस्तर की यह बदलती तस्वीर केवल सरकारी दावों तक सीमित नहीं है, बल्कि यहां के जनजीवन में साफ महसूस की जा सकती है। देखा जाए तो गोलियों की आवाज, बारूद विस्फोट और खौफ के साये से पहचानने जाने वाला बस्तर मानो अब तेजी से बदल रहा है, एक समय जहां शाम ढलते ही सन्नाटा पसर जाता था, वहां अब बच्चों की पढ़ाई की अवाजे गूंज रही है, स्कूलो मे बच्चों की उत्साह देखते नहीं बनता येही है असली विकास और सुशासन की तस्वीर, मानो बस्तर बदलाव की यह सबसे महत्वपूर्ण तस्वीर है, वर्षा के लंबे इन्तेज़ार के बाद नारायणपुर के दूरस्थ इलाकों में 50 से अधिक ऐसे स्कूल दोबारा खोले गए हैं, जहां कभी नक्सलियों के डर से ताले लटक गए थे। अब बच्चे बिना भय के पढ़ाई कर रहे हैं। बस्तर का चर्चित गांव पुवर्ती जो खूंखार नक्सली हिड़मा का गाँव था, जिसे कभी नक्सली गतिविधियों का मजबूत केंद्र माना जाता था, आज सड़क और बिजली से जुड़ चुका है। यह बदलाव इस बात का संकेत है कि अब विकास जंगलों और पहाड़ियों को पार करते हुए अंतिम छोर तक पहुंच रहा है।

'नियद नेल्ला नार' योजना-

'नियद नेल्ला नार' योजना के तहत 521 गांवों में सड़के , स्वास्थ्य, शिक्षा और संचार सुविधाओं का विस्तार किया गया। सरकारी आकंड़ो के अनुसार एक लाख से ज्यादा लोगों के आधार कार्ड बनाए गए,

लगभग 60 हजार लोगों को आयुष्मान कार्ड मिले और बड़ी संख्या में राशन कार्ड तथा मनरेगा जॉब कार्ड वितरित किए गए। इन क्षेत्रों में 43 नई सड़कें बनाई गई हैं। मोबाइल नेटवर्क को मजबूत करने के लिए लगातार नए टावर लगाए जा रहे हैं। महिलाओं को महतारी वंदन योजना के तहत सीधे खातों में राशि मिलने से आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ी है। पिछले ढाई वर्षों में जहा नक्सल विरोधी अभियान में बड़ी सफलता मिली है वहीं सुरक्षाबलों ने 500 से अधिक नक्सलियों को निष्प्रभावी भी किया है। आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को तीन साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की सहायता दी जा रही है। उन्हें जमीन, मकान और रोजगार के लिए प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जा रहा है।

बदलता परिदृश्य

नक्सल मुक्त गांवों में एक करोड़ रुपये तक के विकास कार्य कराए जा रहे हैं। नई पुनर्वास नीति से प्रभावित होकर 2800 से ज्यादा नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है, जबकि 2037 नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया है। फरवरी और मार्च 2026 में 368 आत्मसमर्पित नक्सलियों ने छत्तीसगढ़ विधानसभा का भ्रमण कर लोकतांत्रिक व्यवस्था को समझा। यह इस बात का संकेत है कि हिंसा छोड़कर लोग संवाद और लोकतंत्र के रास्ते को अपना रहे हैं। स्थानीय लोगों में सुरक्षा का भरोसा बढ़ाने के लिए 86 नए सुरक्षा कैंप खोले गए हैं। इन कैंपों की वजह से प्रशासन अब उन इलाकों तक पहुंच पा रहा है, जहां कभी जाना बेहद कठिन माना जाता था। चिल्कापल्ली गांव बदलाव की नई मिसाल बन गया है। यहां आजादी के 77 साल बाद 26 जनवरी 2025 को पहली बार बिजली पहुंची। इसके बाद तेमेनार, पुसकोंटा और हांदावाड़ा जैसे गांवों में भी रोशनी पहुंची। जिन गांवों में कभी अंधेरा और डर एक साथ मौजूद थे, वहां अब सामान्य जीवन लौटता दिखाई दे रहा है। बस्तर में सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन भी तेजी से सामान्य हो रहा है। बस्तर ओलंपिक में 2025 में 3.91 लाख लोगों ने हिस्सा लिया। इनमें नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के युवा, दिव्यांग और आत्मसमर्पित लोग भी शामिल रहे। वहीं बस्तर पंडुम

जैसे आयोजनों ने आदिवासी संस्कृति को नई पहचान दी है। वर्ष 2025 में 47 हजार कलाकार जुड़े थे, जबकि 2026 में इसे और बड़े स्तर पर 12 विधाओं में आयोजित किया गया।

सडको का जाल-

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 2500 किलोमीटर से अधिक सड़कों का निर्माण प्रस्तावित है। 146 सड़क और पुल निर्माण कार्यों के लिए 1109 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। बीजापुर, नारायणपुर, सुकमा और दंतेवाड़ा में कई महत्वपूर्ण सड़क और पुल निर्माण कार्य पूरे हुए हैं। रेल कनेक्टिविटी मजबूत करने के लिए रावघाट–जगदलपुर रेल लाइन को मंजूरी दी गई है। 140 किलोमीटर लंबी इस परियोजना पर 3513 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इसके अलावा कोत्तवलसा–किरंदुल रेल लाइन के दोहरीकरण का काम भी तेजी से चल रहा है। लगभग 2000 फीट की ऊंचाई के पठार पर स्थित बस्तर का मौसम साल भर सुहावना रहता है 7 यहाँ की भौगोलिक स्थिति इसे ट्रैकिंग और जंगल सफारी जैसे एडवेंचर के लिए एक बेहतरीन स्थान बनाती है7

प्रधानमंत्री को निमंत्रण

बदलते बस्तर के स्वरुप और विकास को रफ़्तार देने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने नई दिल्ली प्रवास के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बस्तर आने का निमंत्रण दिया। श्री साया ने बस्तर के समग्र, समावेशी एवं सतत विकास

के लिए तैयार 'बस्तर रोडमैप 2.0' का विस्तृत खाका प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री श्री साय ने बस्तर में शांति स्थापित होने के बाद राज्य सरकार का फोकस तेजी से विकास, रोजगार सृजन और जनजीवन को सशक्त बनाने पर है। इसके तहत बस्तर रोडमैप 2.0 में एग्रो एवं एग्रो-फॉरेस्ट सेक्टर, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, और पर्यटन विकास को प्राथमिकता दी जा रही है, जिससे स्थानीय युवाओं के लिए नए अवसर सृजित होंगे।

कनेक्टिविटी, आजीविका और सामाजिक सशक्तिकरण पर विशेष फोकस

बस्तर रोडमैप 2.0 के तहत 'नियद नेल्ला नार योजना' का विस्तार करते हुए अब इसमें 10 जिलों को शामिल किया जा रहा है, जिनमें बस्तर के 7 जिलों के साथ गरियाबंद, मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी और खैरागढ़-छुईखदान-गंडई भी शामिल होंगे। दूरस्थ क्षेत्रों में आवागमन की सुविधा बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री ग्रामीण बस योजना प्रारंभ की गई है, जो वर्तमान में बस्तर के 38 मार्गों पर संचालित है। साथ ही, बस्तर पंडुम और बस्तर ओलंपिक जैसे आयोजनों से क्षेत्र में आत्मगौरव और नई ऊर्जा का संचार हुआ है। नक्सल-मुक्त पंचायतों में एल्वद योजना के तहत एक करोड़ रुपए तक के विकास कार्य स्वीकृत किए जा रहे हैं, वहीं आत्मसमर्पित नक्सलियों और प्रभावित परिवारों के पुनर्वास के लिए भी प्रभावी प्रयास किए जा रहे हैं।

शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ आजीविका का प्रबंध-

राज्य सरकार के अनुसार बस्तर के रहवासियों के लिए दंतेवाड़ा एजुकेशन सिटी की तर्ज पर ओरछा और जगरगुंडा में भी एजुकेशन सिटी बनाई जा रही है। जगदलपुर में सुपर स्पेशलिटी अस्पताल प्रारंभ हो चुका है तथा दूरस्थ क्षेत्रों के स्वास्थ्य केंद्र भी अब सुचारू रूप से संचालित हो रहे हैं। दंतेवाड़ा के गीदम में मेडिकल कॉलेज की स्थापना की जा रही है। मेडिकल कॉलेज खुलने से लोगो को स्वास्थ्यगत सुविधा भी मिलेगी तो मेडिकल की पढाई करने बच्चो को दूर नहीं जाना पड़ेगा। इंद्रावती नदी पर मटनार और देउरगांव बैराज सहित 2 हजार करोड़ रुपए से अधिक की सिंचाई परियोजनाएं प्रगति पर हैं, जिससे कृषि और जल प्रबंधन को मजबूती मिलेगी। जानकारिनुसार बस्तर के 85 प्रतिशत परिवारों की मासिक आय 15 हजार रुपए से कम है, जिसे अगले तीन वर्षों में बढ़ाकर 30 हजार रुपए प्रति माह तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए आत्मनिर्भर आजीविका क्लस्टर विकसित किए जाएंगे और हितग्राहियों को एनआरएलएम, सहकारी समितियों, एफपीओ एवं वनधन केंद्रों से जोड़ा जाएगा। 'बस्तर मुन्ने' नामक संतृप्तता शिविर कार्यक्रम प्रारंभ किया जा रहा है, जिसके माध्यम से प्रत्येक ग्राम पंचायत में शिविर लगाकर लोगों को योजनाओं का लाभ और समस्याओं का त्वरित समाधान उपलब्ध कराया जाएगा।

सनी-आमिर साथ आकर करेंगे कमाल?

25 साल पहले गदर-लगान ने रचा था इतिहास

15 जून 2001, ये तारीख बॉलीवुड के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है. इस दिन बॉक्स ऑफिस पर दो दमदार फिल्में भिड़ी थीं. सनी देओल की गदर और आमिर खान की लगान, ये दो आइकॉनिक फिल्मों के बीच जबरदस्त क्लैश हुआ था. आमतौर पर फिल्मों के बीच होने वाला क्लैश काफी नुकसानदेह माना जाता है. मगर फिल्म गदर और लगान के साथ ये कहानी उलटी पड़ी. दोनों ही फिल्में बॉक्स ऑफिस पर अच्छी चली, बस फर्क सिर्फ इतना था कि एक ब्लॉकबस्टर हुई तो दूसरी सुपरहिट.

गदर से सनी ने मचाया था तहलका

सनी देओल की फिल्म गदर ने आमिर खान की फिल्म लगान को कड़ी टक्कर में मात दी थी. इंडियन बॉक्स ऑफिस पर तो सनी की फिल्म ने गदर मचाया ही, वर्ल्डवाइड भी फिल्म का कमाल दिखा. इसने आज से 25 साल पहले 133 करोड़ रुपये का ग्रॉस कलेक्शन किया था, जो आज भी एक बड़ी बात मानी जाती है. टिकट बेचने के मामले में भी गदर फिल्म के पास एक अनूठा रिकॉर्ड है, जिसे आज की धुरंधर भी नहीं तोड़ पाई.

जब आमिर से हारे थे सनी देओल

सनी देओल और आमिर खान के बीच हुए इस क्लैश के तार साल 2001 से भी काफी पहले से जुड़े हुए थे. दोनों बॉक्स ऑफिस पर कुल तीन बार भिड़े, जिसमें ज्यादातर आमिर सनी पर भारी पड़े. सबसे पहली बार दोनों सितारे साल 1990 में आमने-सामने आए थे. आमिर की फिल्म दिल और सनी देओल की घायल 22 जून को रिलीज हुई थी. दिलचस्प बात ये रही कि दोनों ही फिल्मों ने एक जैसा बॉक्स ऑफिस कलेक्शन किया, मगर आमिर की फिल्म ने रिटर्न ऑफ इनवेस्टमेंट की वजह से बाजी मार ली.

इसके छह साल बाद 1996 में दोनों सनी और आमिर फिर बॉक्स ऑफिस पर टकराए. इस बार आमिर की सुपरहिट फिल्म राजा हिंदुस्तानी थी, तो वहीं सनी देओल घातक फिल्म लेकर आए थे. घातक और राजा हिंदुस्तानी फिल्म में से जनता ने आमिर की फिल्म को चुना और बॉक्स ऑफिस पर सनी की फिल्म से ज्यादा कमाई करके दी.

अब आमिर के साथ आए सनी देओल

इसमें गौर करने वाली बात ये है कि सनी की जो दो फिल्में घायल और घातक आमिर की फिल्म के साथ टकराईं, उसके डायरेक्टर राजकुमार संतोषी थे. अब सनी देओल, सालों बाद पहली बार आमिर खान के साथ फिल्म बंटवारा 1947 के लिए कोलैब कर रहे हैं, जिसके डायरेक्टर राजकुमार संतोषी हैं. इस फिल्म को सनी के करियर की सबसे बेहतरीन फिल्म बताया जा रहा है, जिसकी शूटिंग कई सालों पहले खत्म हो चुकी थी.

आमिर बतौर प्रोड्यूसर फिल्म बंटवारा 1947 पर राजकुमार संतोषी के साथ काम कर रहे हैं. इसे 14 अगस्त को इमरान हाशमी की फिल्म आवारापन 2 के साथ क्लैश होना है, जो एक और बड़ी रोमांटिक फिल्म है. हालांकि सनी के फैंस को इससे फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उन्हें बंटवारा 1947 (फिल्म) का बेसब्री से इंतजार है. अब देखना है कि सनी देओल और आमिर खान, जिनकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर क्लैश होकर इतिहास रच चुकी हैं क्या उनकी आने वाली फिल्म कमाल करेगी?

अपराध की खौफ से रूबरू कराती है 'राख'

'राख' की कहानी 1978 के चर्चित रांगा-बिल्ला केस से प्रेरित है. कहानी दो भाई-बहन, सुमन और साहिल अरोड़ा के इर्द-गिर्द घूमती है. बारिश वाले दिन दोनों बस स्टॉप पर खड़े होते हैं. सुमन को रेडियो स्टेशन में गाना गाने जाना है और उसका भाई उसके साथ है. तभी एक फिएट कार में बैठे दो अजनबी उन्हें लिफ्ट ऑफर करते हैं. बच्चे उनकी बात मान लेते हैं, लेकिन फिर कभी घर नहीं लौटते.

इसके बाद शुरू होती है एक ऐसी जांच, जो सिर्फ किडनैपिंग केस नहीं रहती बल्कि देश को हिला देने वाले हत्या कांड में बदल जाती है. यंग सब-इंस्पेक्टर जयप्रकाश इस केस की कमान संभालता है और अपराधियों की तलाश में निकल पड़ता है. कहानी सिर्फ पुलिस जांच तक सीमित नहीं रहती, बल्कि हत्यारों की मानसिकता और उनकी भागदौड़ को भी विस्तार से दिखाती है.

दो टाइमलाइन का शानदार खेल

सीरीज का सबसे बड़ा प्लस पॉइंट इसका स्क्रीनप्ले है. एक तरफ पुलिस की जांच चल रही है, दूसरी तरफ अपराधियों बाबू और रज्जो की गतिविधियां दिखाई जाती हैं. दोनों टाइमलाइन लगभग एक हफ्ते के अंतर पर चलती हैं और धीरे-धीरे एक बिंदु पर आकर मिलती हैं। हर एपिसोड को अलग चैप्टर की तरह पेश किया गया है. 'गुमशुदा', 'जानवर' जैसे टाइटल कहानी के मूड को और मजबूत बनाते हैं. हालांकि कुछ जगहों पर एपिसोड थोड़े लंबे महसूस होते हैं, लेकिन रहस्य और तनाव इतना मजबूत है कि दर्शक जुड़े रहते हैं.

सीरीज ने बनाया बेचैन कर देने वाला माहौल

'पाताल लोक' फेम डायरेक्टर प्रोसित रॉय ने यहां भी कमाल का काम किया है. उन्होंने 70 के दशक की दिल्ली को बेहद वास्तविक तरीके से स्क्रीन पर उतारा है. पुरानी दिल्ली की सड़कें, बस स्टॉप, पुलिस सिस्टम और उस दौर का सामाजिक माहौल सब कुछ बेहद असली सा लगता है।

डायरेक्टर सिर्फ अपराध नहीं दिखाते, बल्कि उस दौर के समाज को भी समझाने की कोशिश करते हैं. कैसे एक घटना ने दिल्ली की पहचान बदल दी और लोगों के भीतर डर पैदा कर दिया, ये बात सीरीज बहुत प्रभावी तरीके से सामने लाती है. कई सीन इतने असहज और डरावने हैं कि लंबे समय तक दिमाग से नहीं निकलते. ये सीरीज मनोरंजन से ज्यादा आपको झकझोरने का काम करती है.

हर कलाकार ने छोड़ी गहरी छाप

सब-इंस्पेक्टर जयप्रकाश के किरदार में अली फजल पूरी सीरीज की जान हैं. एक युवा पुलिस अफसर के संघर्ष, गुस्से, बेबसी और जुनून को उन्होंने शानदार तरीके से निभाया है. जैसे-जैसे केस आगे बढ़ता है, उनका किरदार और मजबूत होता जाता है.

वहीं सोनाली बेंद्रे ने बच्चों को खो चुकी मां की पीड़ा को बेहद असरदार ढंग से निभाया है. कई जगह वो बिना डायलॉग के सिर्फ अपनी आंखों से दर्द बयां कर देती हैं. उनका प्रदर्शन सीरीज के सबसे भावुक हिस्सों में से एक है। आमिर बशीर एक सख्त लेकिन टूट चुके पिता के रूप में प्रभावित करते हैं. वहीं राकेश बेदी का किरदार कहानी में नया और गंभीर अनुभव लेकर आता है. रामनदीप यादव (रज्जो) और आकाश मखीजा (बाबू) इतने खतरनाक और डरावने लगे हैं कि उनसे नफरत करना लाजिमी होगा. खासकर बाबू का बैकस्टोरी ट्रैक बेहद परेशान करने वाला और यादगार है. यही उनके किरदार की खासियत है।

'सिक्सर किंग' युवराज सिंह की होगी IPL में वापसी

टीम इंडिया के पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह अब इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) में एक नई भूमिका निभाते हुए नजर आ सकते हैं. TOI की रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली कैपिटल्स (DC) आईपीएल 2027 के जरिए युवराज को अपने सपोर्ट स्टाफ में शामिल करने की तैयारी कर रही है. यदि ऐसा होता है तो यह युवराज के कोचिंग करियर का पहला बड़ा और हाई-प्रोफाइल असाइनमेंट होगा.

दिल्ली कैपिटल्स आईपीएल के शुरुआती सीजन से ही खिताब की तलाश में है, लेकिन टीम लगातार उम्मीदों पर खरी नहीं उतर सकी. ऐसे में दिल्ली कैपिटल्स अब अपने सपोर्ट स्टाफ में बड़े बदलाव की योजना बना रही है और इसी कड़ी में युवराज सिंह का नाम सबसे आगे बताया जा रहा है।

अगले दो वर्षों के लिए दिल्ली कैपिटल्स का संचालन फिर से JSW समूह के हाथों में होगा. इसके साथ ही पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली दिल्ली कैपिटल्स में एक बार फिर से डायरेक्टर ऑफ क्रिकेट की भूमिका निभा सकते हैं. गांगुली और युवराज सिंह की जोड़ी दिल्ली कैपिटल्स के लिए नया अध्याय लिख सकती है. फ्रेंचाइजी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी संकेत दिए हैं कि युवराज को टीम से जोड़ने को लेकर गंभीर चर्चा चल रही है.

अभिषेक-शुभमन को कर चुके ट्रेन

युवराज सिंह भले ही अब तक किसी आईपीएल टीम के आधिकारिक कोच नहीं बने हों, लेकिन युवा खिलाड़ियों को निखारने में उनकी भूमिका किसी से छिपी नहीं है. भारत के युवा सितारे अभिषेक शर्मा, शुभमन गिल और प्रभसिमरन सिंह कई मौकों पर स्वीकार कर चुके हैं कि युवराज ने उनके खेल और मानसिकता को बेहतर बनाने में अहम योगदान दिया. खासकर अभिषेक के करियर में युवराज की भूमिका को काफी महत्वपूर्ण माना जाता है. क्रिकेट जगत में युवराज को सिर्फ एक कोच नहीं, बल्कि एक ऐसे मेंटर के रूप में देखा जाता है जो खिलाड़ियों को तकनीक के साथ-साथ दबाव झेलने और बड़े मंच पर प्रदर्शन करने की कला भी सिखाते हैं.

युवराज सिंह की कोचिंग शैली भी उन्हें बाकी पूर्व खिलाड़ियों से अलग बनाती है. युवी सिर्फ सलाह देने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि खिलाड़ियों के साथ मैदान पर घंटों समय बिताते हैं. नेट्स के पीछे खड़े होकर बल्लेबाजों की तकनीक पर काम करना, मानसिक मजबूती पर चर्चा करना और मैच परिस्थितियों को समझाना उनकी कोचिंग का अहम हिस्सा है. यही वजह है कि युवा खिलाड़ी उनके साथ काम करना पसंद करते हैं.

अक्षर पटेल की कप्तानी वाली दिल्ली कैपिटल्स का आईपीएल 2026 में प्रदर्शन निराशाजनक रहा था. टीम 14 मैचों में सिर्फ 7 जीत हासिल कर पाई और प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो गई. टीम की बल्लेबाजी कई महत्वपूर्ण मौकों पर लड़खड़ाई, जबकि गेंदबाजी यूनिट भी निरंतरता नहीं दिखा सकी. ऐसे में फ्रेंचाइजी को उम्मीद है कि युवराज जैसा अनुभवी क्रिकेटर खिलाड़ियों में नई ऊर्जा और आत्मविश्वास भर सकता है।

युवराज सिंह ने अपने आईपीएल करियर में 132 मुकाबले खेलकर 24.77 की औसत से 2750 रन बनाए. इस दौरान उनके बल्ले से 13 अर्धशतक निकले और उनका स्ट्राइक रेट 129.71 रहा. बल्लेबाजी के अलावा उन्होंने अपनी स्पिन गेंदबाजी से भी कुछ मौकों पर टीम को जीत दिलाई. भारत को टी20 वर्ल्ड कप 2007 और क्रिकेट वर्ल्ड कप 2011 जिताने में अहम भूमिका निभाने वाले युवराज अब अपने अनुभव का फायदा युवा खिलाड़ियों को देना चाहते हैं।

'हिम्मत है तो रिंग में आओ', श्रीसंत ने हरभजन को ललकारा

थप्पड़कांड पर फिर छिड़ी जंग, पुराना जख्म हरा!

भारतीय क्रिकेट के सबसे चर्चित विवादों में से एक 'स्लैपगेट' एक बार फिर चर्चा में है. पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज एस श्रीसंत ने अपने पूर्व साथी खिलाड़ी हरभजन सिंह को खुली चुनौती देते हुए रिंग में लड़ने का न्योता दिया है. श्रीसंत का यह बयान उस समय आया है जब उन्होंने एक हालिया विज्ञापन पर नाराजगी जताई, जिसे वह 2008 के थप्पड़कांड से जोड़कर देख रहे हैं.

करीब दो दशक पुराने इस विवाद को लेकर श्रीसंत ने में खुलकर अपनी बात रखी. उन्होंने दावा किया कि हरभजन सिंह अब भी उस घटना का इस्तेमाल कर रहे हैं और उससे आर्थिक फायदा उठा रहे हैं. इसी बात से नाराज होकर उन्होंने सार्वजनिक तौर पर हरभजन को फाइट के लिए चुनौती दे डाली.

'क्या रिंग में आने की हिम्मत है?'

एक इंटरव्यू में श्रीसंत ने हरभजन को सीधे संबोधित करते हुए कहा कि अगर उनमें हिम्मत है तो वे रिंग में उतरकर मुकाबला करें. उन्होंने एक पुराने प्रमोशनल पोस्टर का जिक्र किया, जिसमें दोनों खिलाड़ी बॉक्सिंग ग्लव्स पहनकर आमने-सामने खड़े नजर आए थे। श्रीसंत ने कहा कि तस्वीरों और एक्टिंग से अलग, वह असली मुकाबला चाहते हैं. उनका कहना था कि अगर हरभजन में साहस है तो वे आधिकारिक तौर पर मुकाबले के लिए सहमति दें और रिंग में आकर आमने-सामने लड़ें।

बेयर नकल फाइट लीग का दिया हवाला

पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज ने अपनी चुनौती को और आगे बढ़ाते हुए कहा कि वह इस समय बेयर नकल फाइट लीग का हिस्सा हैं. उन्होंने हरभजन से कहा कि अगर उन्हें स्लैपगेट और उनसे इतनी ही परेशानी है तो दोनों को विज्ञापनों और प्रचार से आगे बढ़कर वास्तविक मुकाबला करना चाहिए। श्रीसंत ने भावुक अंदाज में कहा कि वह दिल से हरभजन को बुला रहे हैं. उन्होंने यह भी कहा कि अगर दोनों में आत्मसम्मान है तो पुरानी बातों पर विज्ञापन बनाने के बजाय सीधे रिंग में आकर मामला सुलझाना चाहिए. उन्होंने मजाकिया अंदाज में मलयाली और सरदार समुदाय का भी जिक्र करते हुए हरभजन को चुनौती स्वीकार करने के लिए कहा।

क्या था 2008 का स्लैपगेट विवाद?

यह पूरा मामला आईपीएल 2008 के उद्घाटन सीजन से जुड़ा है. उस समय हरभजन सिंह मुंबई इंडियंस का हिस्सा थे, जबकि श्रीसंत किंग्स इलेवन पंजाब (अब पंजाब किंग्स) के लिए खेल रहे थे.

एक मैच के बाद हरभजन ने कथित तौर पर श्रीसंत को थप्पड़ मार दिया था. इसके बाद मैदान पर रोते हुए श्रीसंत की तस्वीरें पूरे देश में चर्चा का विषय बन गईं थीं. घटना की काफी आलोचना हुई और हरभजन के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई भी की गई थी. यह विवाद भारतीय क्रिकेट इतिहास के सबसे चर्चित ऑफ-फील्ड विवादों में गिना जाता है.

हालिया विवाद की वजह क्या है?

श्रीसंत के मुताबिक, हाल ही में आए एक विज्ञापन में स्लैपगेट विवाद की ओर इशारा किया गया था. उनका आरोप है कि इस कैंपेन के जरिए पुराने विवाद को हल्के-फुल्के अंदाज में पेश किया गया और उससे व्यावसायिक लाभ कमाया गया।

– निवेदन –

स्वतंत्र बोल से संबंधित कोई भी सुझाव या शिकायत हो तो आप नीचे लिखे पते पर भेज सकते हैं। फोन और ई-मेल पर भी जानकारी दे सकते हैं। इसके अलावा आपके क्षेत्र से घटित कोई घटना, समाचार, या अन्य कोई गतिविधि जो पत्रिका में प्रकाशन योग्य हो.. तो उसे भी भेज सकते हैं।

छत्तीसगढ़ का सबसे विश्वसनीय हिन्दी मासिक पत्रिका
तेजी से बढ़ता यूट्यूब चैनल और न्यूज वेबसाइट को निर्भीक और जनपक्षीय पत्रकारिता के लिये आर्थिक रूप से सहयोग करें।

बंधन बैंक

बैंक खाता नंबर - 20100031810292
आईएफएससी कोड - BDBL0001958

संपादक स्वतंत्र बोल

डी-317 बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने टैगोर नगर, रायपुर (छ.ग.)

97543-74333, bolswatantra@gmail.com

swatantrabol swatantrabol www.swatantrabol.com हिन्दी मासिक पत्रिका

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

नैनो उर्वरक तरल

किसान मित्रों के लिए है वरदान

सभी सहकारी समितियों में उर्वरकों का है पर्याप्त भण्डारण

आधी लागत अच्छी पैदावार

थरहा उपचार

5 मिली / 1 लीटर पानी

» **नैनो डीएपी**

बीज रोपाई से पूर्व थरहे को इस घोल में उपचारित करें

रोपाई के 30-35 दिन बाद

पहला छिड़काव

- नैनो डीएपी – **4 मिली/लीटर**
- नैनो यूरिया प्लस – **4 मिली/लीटर**
- नैनो जिंक – **1 मिली/लीटर**

मिलाकर **पत्तियों** पर छिड़काव करें

रोपाई के 55-60 दिन बाद

दूसरा छिड़काव

- नैनो यूरिया प्लस **4 मिली/लीटर**

घोल बनाकर **पत्तियों** पर समान रूप से छिड़काव करें

नैनो जिंक (30-35 दिन) 100 मिली / एकड़

नैनो कॉपर (30-35 दिन) 100 मिली / एकड़

ध्यान रखें

- छिड़काव हेतु **125 लीटर पानी प्रति एकड़** आवश्यक है
- नैनो यूरिया की मात्रा **500 मिली प्रति एकड़** से अधिक न करें
- **छिड़काव सुबह** या **शाम** के समय करें, तेज धूप में न करें

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क | Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

RO. No. 13844/232